CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अंजाम-ए-दारू

12.2

त्रिपुरारी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"The state shall regard the raising of the level of nutrition and the standard of living of its people and the improvement of public health as among its primary duties and in particular, the state shall endeavour to bring about prohibition of the consumption, except for medical purposes of intoxication drinks and of drugs which are injurious to health."

—Constitution of India
**Article 47**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अंजाम-ए-दारू

त्रिपुरारी राय

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज,
109-पी, आराम बाग, नई दिल्ली-110055

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनवरी 1995
© श्रीमती सुधा राय

मूल्य : 25.00 रुपये

श्रीमती सुधा राय द्वारा प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस,
5-ई, रानी झांसी रोड, नयी दिल्ली-110055 से मुद्रित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंजारे की अन्तिम आवाज़
सादर
मीना को समर्पित !

—त्रिपुरारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सूची


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | 7 |
| प्रतिक्रियायें | 9 |
| अन्जाम -ए - दारू | 13 |
| मीना - मय - मरघट | 19 |
| किरातों की मीना—कल और आज | 27 |
| बुद्धू बंजारा | 35 |
| बंजारे की मीना—मद और मौत | 45 |


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# सम्पादकीय

कोई भी समाज तभी सुख-सम्पन्न हो सकता है जब सभी व्यक्ति विनीत हों, एक दूसरे का आदर करें, मन, वाणी और शरीर से स्वस्थ हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा से व्यक्ति 'विनीत' बनता है अर्थात् वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ या घमण्ड के स्थान पर (या अपनी अस्मिता के साथ-साथ) सामाजिक स्वार्थ या अस्मिता का आदर करना सीखता है। तभी वह समाज की सेवा करने के लायक (पात्र) बनता है। और तब वह सत्यनिष्ठा से जीविकोपार्जन करने का अधिकारी बनता है। फिर वह अपने परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्व के प्रति अपने उत्तरदायित्व (धर्म) को अच्छी तरह निभा सकता है। और उसके बाद ही वह सच्चे अर्थ में सच्चे सुख का हकदार बनता है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनम् आप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥

आज स्थिति कुछ ऐसी बन रही है कि विद्या, विनय, पात्रता, धर्म और (सच्चे) सुख के स्थान पर केवल 'धन' हमारे व्यक्तिगत जीवन का लक्ष्य बन गया है।

परिणाम यह है कि एक वर्ग ऐसे तैयार हो रहा है जो पाखण्ड एवं तस्करी वृत्ति से पूरे समाज का समग्र शोषण करने में लगा हुआ है। उसके पास इतना अपरिमित धन है कि धन रखने की भी जगह नहीं है। ऐंसी स्थिति में वह अपने 'अनावश्यक' धन को खुली 'बोतलों' में भर कर तृप्त हो रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरी ओर, जिस किसी तरह अपना जीपिकोपार्जन करने वाला वर्ग, उपर्युक्त वर्ग का अनुकरण करने का प्रयास कर रहा है। अपने रात-दिन के पसीने की कमाई को 'बोतलों' में भर कर अपने परिवार को रुलाते-रुलाते नहीं थकता।

इस तरह हमारा समाज मद्य-सेवन की संक्रामक व्याधि से बुरी तरह ग्रस्त होता जा रहा है। यह उसकी अर्थव्यवस्था को तो क्षत-विक्षत कर ही रहा है, सामाजिक, व्यक्तिगत, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी उससे दुष्प्रभावित हो रहा है।

त्रिपुरारी राय का 'अंजाम-ए-दारू' इस संक्रामक, घातक व्याधि पर तीखा प्रहार है। भगवान से प्रार्थना है कि हमारा समाज 'अंजाम-ए-दारू' से अधिक से अधिक लाभान्वित हो और इस घातक व्याधि से मुक्ति पाने का संकल्प ले। नकली सुख के स्थान पर सच्चा सुख समाज में प्रतिष्ठापित हो।

20-1-1995 रामकरण शर्मा



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# प्रथम संस्करण पर प्राप्त कुछ प्रतिक्रियायें

आपका पत्रांक समाज/1/94, दिनांक 30-6-1994 प्राप्त हुआ। पत्र के साथ "अंजाम-ए-दारू" शीर्षक बुक्लेट भी प्राप्त हुई, धन्यवाद।

आज समाज में मदिरा जैसे नशीले पदार्थों का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इन नशीले पदार्थों का समाज पर जो दुष्प्रभाव पड़ रहा है वह अब किसी से छुपा हुआ नहीं है। समाज को इस तरह के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए आपकी संस्था ने "अंजाम-ए-दारू" शीर्षक बुक्लेट प्रकाशित कर एक सराहनीय कार्य किया है। मुझे आशा है कि उक्त बुक्लेट में व्यक्त विचारों को पढ़ कर पाठकों को इन नशीले पदार्थों से दूर रहने की प्रेरणा मिलेगी।

मैं आशा करता हूं कि आपकी संस्था इस सामाजिक उद्देश्य की प्राप्ति में कामयाब होगी तथा "अंजाम-ए-दारू" बुक्लेट में निहित संदेश देश के दूर-दराज के इलाकों में भी पहुंचेगा।

चन्द्रधर त्रिपाठी
सचिव
भारत सरकार

नई दिल्ली
22 अगस्त 1994



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मादक दवाओं के दुरुपयोग के विरुद्ध 26 जून, 94 को मनाए गए अन्तरराष्ट्रीय दिवस के अवसर पर स्वामी सहजानन्द सरस्वती समाज द्वारा प्रकाशित बुक्लेट "अंजाम-ए-दारू" को पढ़ने के बाद यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि बुक्लेट का लेखक मद्यपान के अभिशापों के विरुद्ध जन-जागरण पैदा करने में पूर्णतः सफल है। मादक वस्तुओं में मद्यपान की प्रवृत्ति प्रबुद्ध एवं श्रमिक वर्ग में उत्तरोत्तर नगर-ग्राम में सुगम उपलब्धता के कारण बढ़ती जा रही है और एक विकराल राष्ट्रीय समस्या सुरसा बन कर खड़ी है। मद्य-निषेध के सरकारी प्रयत्न सरकार की परस्पर विरोधी नीतियों के कारण असफल ही हुए हैं। ऐसी स्थिति में ऐसे स्वैच्छिक संगठन ही इन विनाशकारी राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में अपनी अहं भूमिका निभा सकते हैं।

यह निर्विवाद है कि आज युवा पीढ़ी की रुचि न पढ़ने में है और न ही खेती और व्यवसाय करने में। और विशेष रूप से वह मदिरा सेवन के प्रति उत्साहित हैं। समाज में जब-जब पंच मकारों को महत्व मिला है और वह कार्य सिद्धि का प्रमुख साधन बना है, तब-तब समाज का पतन हुआ है। तांत्रिक युग इसका प्रमाण है। आज भी पंच मकारों का महत्व बढ़ रहा है, यह कार्य सिद्धि का सशक्त साधन है। इसलिए समाज पतनोन्मुख होने को अग्रसर है। यह तन-मन-धन और मान-सम्मान को क्षीण करता ही है, मानवता का सबसे बड़ा शत्रु है। इसीलिए तो शराब को विष से भी भयंकर कहा गया है। यह बुक्लेट इस कथन को चरितार्थ करती है। विद्वान लेखक मदिरापान के दुष्परिणामों को दर्पण की तरह उजागर करता है। अपने दैनिक जीवन के अनुभवों, पड़ोसियों, मित्रों के पारिवारिक जीवन के यथार्थ चित्रण और स्वामी सहजानन्द जी सहित अनेक प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय मनीषियों, चिंतकों, साहित्यकारों के विचारों आदि का उल्लेख करके लेखक जन-सामान्य में मद्यपान के अभिशापों के विरुद्ध चेतना पैदा करने में अपने प्रथम प्रयत्न में पूर्ण रूप से सफल हुआ है। यह प्रयास स्तुत्य है।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि यह स्वैच्छिक संगठन इसी क्षमता के साथ अन्य राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जन सामान्य में चेतना जगाकर उसके सशक्त एवं सार्थक समाधान में अपनी अहं भूमिका का निर्वाह करता रहे और मानवता का कल्याण करे।

बरदह (आज़मगढ़) — डा. सच्चिदानन्द राय<br>
18-8-94 — प्राचार्य



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी लिखी पुस्तिका 'अंजाम-ए-दारू' मिली । हार्दिक धन्यवाद ।

शराब बहुत ही घातक पेय पदार्थ है । इसके सेवन से बहुत हानियाँ होती हैं । एक अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने कहा है: युद्ध, अकाल और महामारी-- इन तीनों ने मिलकर मानव जाति को इतनी हानि नहीं पहुंचायी है जितनी कि अकेली मदिरा ने । एक भारतीय विद्वान ने भी कहा है कि शराब क्षयरोग के ही समान है जो जिसका दामन पकड़ती है उसे समाप्त करके ही छोड़ती है ।

विद्वान लेखक श्री त्रिपुरारी राय ने मद्यपान से होने वाली बुराइयों पर बहुत गहराई से चिन्तन किया है । इन्होंने इस विषय पर विशेष अध्ययन भी किया है । इन्होंने अपने विचारों के समर्थन में कुछ महापुरुषों के विचारों को भी उद्धृत किया है । मद्यपान से किस तरह बर्बादी हो रही है इसे कुछ उदाहरणों से भी इन्होंने स्पष्ट किया है ।

लेखक ने व्यक्ति एवं समाज के हित की दृष्टि से मद्यपान का घोर विरोध किया है । इन्होंने लिखा है: मद्यपान मनुष्य को मनसा, वाचा एवं कर्मणा तीनों से क्षीण कर देता है । वह मनुष्य होते हुए भी पशुवत् जीवन व्यतीत करने लगता है । मद्य यमराज का बड़ा भाई है । यमराज तो केवल प्राण लेता है और यह प्राणों के साथ-साथ धन-दौलत, इज्जत, मर्यादा का भी सफाया कर देती है (पृष्ठ -3) ।

यह पुस्तिका प्रत्येक व्यक्ति के लिए पठनीय है । मद्यपान करने वाले को मद्यपान छोड़ने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा । मद्यपान नहीं करने वाला व्यक्ति मद्यपान करने वाले को समझा बुझाकर हतोत्साहित करेगा ।

लेखक साधुवाद का पात्र है । इन्होंने अन्तरराष्ट्रीय मद्य निषेध दिवस पर इसे प्रकाशित कर जन हित में बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है ।

डा. राधा कृष्ण शर्मा
भू. पू. अध्यक्ष
इतिहास विभाग

छपरा
17-9-94



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# अंजाम-ए-दारू

अपने समाज के एक मध्यमवर्गीय परिवार में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। परिवार में प्रसन्नता एवं खुशहाली का वातावरण था। मां और बाप को बधाइयां तथा पुत्र के दीर्घ जीवन की शुभकामनाएं मिल रही थीं। यह अवसर था पुत्र की बरही का। बड़ी धूमधाम से यह मनायी जा रही थी। खूबसूरत पंडाल, बिजली की चकाचौंध, मधुर संगीत तथा उस पर बच्चों के थिरकते कदम अत्यन्त मनोहारी लग रहे थे। यह मनमोहक वातावरण विषाक्त हो गया। सभी लोग स्तब्ध रह गये। प्लेटें टूटने लगीं। सर फूटने लगे और लोग-बाग अपनी अशिष्ट श्रेष्ठता दिखाने लगे। कुछ समय बाद सन्नाटे का साम्राज्य स्थापित हो गया। यह स्थिति मेरे लिए असहनीय थी और मैं हक्का-बक्का एक किनारे असहाय - सा खड़ा था।

मानसिक स्थिति सामान्य होते ही कारणों का पता लगाया। मालूम हुआ कि शुभ अवसर पर बिरादरी में अपने सामाजिक वैभव का प्रदर्शन करने के लिए दारू की पूरी व्यवस्था थी। भाई लोगों ने उस विषाक्त मधु का इतना आचमन किया कि अपने आपको भूल गए कि वे क्या हैं ? स्वयं 800 कि.मी. दूर घर से नौकरी करने दिल्ली आये हैं और यहां झूठी प्रतिष्ठा तथा वाह-वाही लूटने हेतु अपने को दारू में डुबो रहे हैं। ऐसा क्यों ? क्या यही उनकी श्रेष्ठता का परिचायक है ? मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी दारू के अंजाम की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने का सफल अथवा असफल प्रयास करूं, क्योंकि यही एकमात्र ऐसा अमृतपान है जिसका वरदान व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की बरबादी के सिवाय और कुछ नहीं है।

हे सोमरस जी ! सर्वप्रथम आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें क्योंकि आप शरणागत को तन, मन, धन से क्षीण कर देते हैं ताकि आपके अनुज यमराज को ज्यादा कष्ट न हो। आपका शुभागमन समुद्र मंथन से हुआ और आपके अमृत का



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पान स्वयं की रक्षा करने में सशक्त एवं सक्षम राक्षसों को इसीलिए कराया गया कि वे शक्तिहीन हो जाएं और देवता उन पर आसानी से विजय पा सकें। हुआ भी ऐसा ही। आपने उनमें एक ऐसी मदहोशी पैदा कर दी कि वे मनसा, वाचा और कर्मणा--तीनों से क्षीण हो गये और आपकी इस कुटिलता ने उनके सर्वनाश का बीजारोपण कर दिया।

वनवासी महर्षियों ने सोमरस की विभीषिका पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है: "सोमस्याहं देवयज्या सुरेता रेता धिषीय इत्याह सोमों वै रेवोधाः तैनेव रेत् अत्मन्धत्ते"। अर्थात् सोम की देवयज्या से प्रभूत होकर रेत धारण करूंगा, क्योंकि सोम रेत उत्पन्न करता है। सोमरस का पान करने पर मदमस्त होने से हर क्रिया मुक्त रूप से की जा सकती है। सोमरस पान से मनुष्य मदमस्त बनता है तथा उसमें दूसरे को पीड़ा पहुंचाने की प्रबल इच्छा उत्पन्न होती है। यह पीड़ा या तो उसे मार डालती है या उसे मृत्यु के कगार पर पहुंचा देती है। इतना ही नहीं सोमरस पान करने वाला व्यक्ति भी अपनी शारीरिक और मानसिक इच्छा शक्ति समाप्त कर बैठता है। कालान्तर में वह मनुष्य होते हुए भी पशुवत् जीवन व्यतीत करने लगता है।

सोमरस पान रोकने का प्रयास तो हुआ परन्तु क्षणिक। ऐसा कहा जाता है कि बादशाह औरंगजेब को अपने हरम की एक नर्तकी से बहुत प्यार हो गया था। उसने नर्तकी के आग्रह पर शराब का सेवन करना प्रारम्भ कर दिया था। वह नर्तकी और शराब को इतना आत्मसात् कर लिया था कि खुदा की इबादत करना भी भूल गया। नर्तकी की मृत्यु के पश्चात बादशाह ने महसूस किया कि नर्तकी और शराब के कारण वह खुदा को और अपने शहंशाही फर्ज को भूल गया। सत्य का बोध होते ही बादशाह सलामत ने फरमान जारी करके अपनी सल्तनत में सुरा तथा सुन्दरी (नर्तकी आदि) के सेवन को निषेध घोषित कर दिया। बादशाह के मरणोपरान्त दारू ने पुनः अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

पं. राहुल सांकृत्यायन जी ने मद्यनिषेध पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है: "शराब की मुमानियत संसार के कई प्रधान धर्म करते हैं। इस्लाम भी अपने को इसका जानी दुश्मन कहता है। शराब पीना भारी दुराचार माना जाता है। लेकिन धनिकों में पिछले तेरह सौ साल में कितनों ने इन नियमों की पाबन्दी की है ? बहुत जगह तो शराब की दुकानों के मालिक मुसलमान हैं। जिस वक्त मुसलमानी सल्तनतों ने शराब के खिलाफ कड़ी-कड़ी सजाएं मुकर्रर की थीं,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस वक्त धनी लोगों को शराब पीने में बाधा नहीं होती थी। हिन्दुओं में भी कि... ं ही सम्प्रदाय मद्यपान को महापाप समझते हैं। लेकिन कितनी जातियां हैं जिनके धनिक उससे बचे हुए हैं ?" ब्रह्मण, बनिया, राजपूत, जिस किसी के पास खर्च करने के लिए इफरात पैसा है, बेखटके पीते हैं, और जात वाले टुक-टुक ताकते रह जाते हैं। शराब के पीछे लाठी लेकर फिरने वाले महात्माजी के अनुयायियों में भी कितने बड़े-बड़े महापुरुष हैं, जो भीतरी तौर पर इसके बारे में अपने गुरू से भारी मतभेद रखते हैं, चाहे मद्यनिषेध की व्यवस्था देने में वह किसी से पीछे रहने वाले न भी हों।"

मदिरा सेवकों के क्रूरतम सामाजिक व्यवहार के विषय में स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ने लिखा है:

"जब आदमी शराब पीकर मतवाला होता है, तो अपनी बहू-बेटी के सामने भी नंगा होकर नाचता और उसकी इज्जत उतारने में नहीं हिचकता... । रावण भी तो आखिर वेद-वेदान्त का ज्ञाता था। ब्राह्मण ही था। एक बहुत बड़े ऋषि का पोता। मगर कौन-सा कुकर्म उससे बचा था ? नशे की हालत में मनुष्य अपने आपको भूल जाता है। अपने भीतर निवास करने वाली मानवता की देवी को देख नहीं सकता, पहचान नहीं सकता। फिर औरों में रहने वाली को क्यों कर पहचाने और देखे ?...यह मदिरा उसे मनुष्य से पशु और इंसान से हैवान बना डालती है। खूबी तो यह है कि इस चीज को वह समझ भी नहीं सकता।... शराबी शराब को जी -जान से पंसद करता है और उससे लिपटता है... । वह इस पिशाची को, इस मदिरा को छोड़ना नहीं चाहता, बल्कि सारी ताकत लगाकर उससे लिपटना चाहता है। आखिर वह मदिरा ही क्या, जो बेहोश और विवेक-भ्रष्ट न करे ?"

आचार्य तुलसी ने इस मादक के दामन को बरबादी से जोड़ते हुए लिखा है :

"शराब से स्वास्थ्य, मन-मस्तिष्क और इज्जत सब पर दुष्प्रभाव पड़ता है। फिर भी कुछ लोग बड़े चाव से शराब पीते हैं। आखिर वे ऐसी नादानी क्यों करते हैं ? इस प्रश्न पर विचार किया जाय तो भारतीय परिवेश में शराब पीने के प्रमुख कारण है : विलासिता उन्मुखी सोसाइटी, कुसंगति और अज्ञान।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विलासिता की वृत्ति उनमें पनपती है, जो पूरी तरह रईसी के साये में जीते हैं। उनका अभिमत है कि जीवन में मस्ती लाने का यह आवश्यक तत्व है, पर ऐसी मस्ती किस काम की जिसका दामन बरबादी में बंधा हुआ है।"

मदिरा सेवन से बाहरी मस्ती का अनुभव तो होता है, पर भीतर से चेतना खोखली हो जाती है। इसके नियमित सेवकों की जीवन शक्ति क्षीण हो जाती है, स्नायुगत दुर्बलता बढ़ जाती है, गुणसूत्र और जीवन दुष्प्रभावित हो जाता है, चिन्तन की क्षमता घटती जाती है, विवेक की शक्ति कमजोर होती जाती है, आपराधिक मनोवृत्ति अंकुरित होने लगती है, भावी पीढ़ी का प्राकृतिक व स्वाभाविक विकास बाधित हो जाता है। आज शराब के विज्ञापन तथा इसकी हर बोतल पर लिखा होता है "शराब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है--वैधानिक चेतावनी"। फिर भी लोग इस अमृतपान का रसास्वादन करने में गर्व महसूस करते हैं। ऐसा क्यों ? माना कि प्रचार माध्यमों में इसे वैधानिक चेतावनी के रूप में प्रचारित किया जा रहा है, फिर भी यह चेतावनी है। हर चेतावनी की उपेक्षा विध्वंसक होती है।

सोमरस का छक कर सेवन किये हुए एक सज्जन मुझसे मिले। जीवन में पहली बार उन्हें प्रसन्नता की पराकाष्ठा पर देखा। गर्व के साथ उनके मुखारबिन्द से बदबू करती, लड़खड़ाती आवाज अभी तक मेरे कानों में प्रतिध्वनित हो रही रही है: "26 वर्ष बाद आज हमारा खानदानी बदला पूरा हुआ।" उन सज्जन ने बताया कि...साहब के एकमात्र दीपक की लौ को बुझाने के लिए उन्होंने उसे दारू का दर्शन कराया। अपने खून- पसीने की कमाई का मात्र 2,000 रु. उस पर खर्च किया। बाद में दारू ने उसकी जमीन, बीवी के जेवर व बाप की अंतिम पूंजी समर्पण करा ली और एक दिन वह नशे की हालत में दुर्घटना का शिकार हो गया। अब उसके माता-पिता और पत्नी की चिता में आग लगाने वाला कोई नहीं बचा। यह सुनकर मैं स्तब्ध और हतप्रभ रह गया। एकाएक दिल से एक आवाज निकली, "दूसरे का घर जलाने वालों का भी घर एक दिन अवश्य जलता है"। कुछ दिन बाद पता चला कि वह सज्जन स्वयं दारू के शरणागत हुए और छत से गिर कर यमराज के पास पहुंच गये। धन्य है दारू ! जिसे मां की कोख, पत्नी का सुहाग, बच्चों का नाथ छीनने में महारत प्राप्त है। यह यमराज का बड़ा भाई है। यमराज तो केवल प्राण लेता है और यह दारू प्राण के साथ-साथ धन-दौलत, इज्जत और मर्यादा का भी सफाया कर देती है।

मैं एक ऐसे मित्र का जिक्र करना प्रासंगिक समझता हूं जो बचपन से ही अपने को अधूरा महसूस करता था। वह शादीशुदा था। उसके बच्चे भी थे। ईमानदारी,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिश्रम, अहिंसा तथा अन्नदाता के प्रति हमेशा समर्पित व वफादार रहता था। वह 15 वर्षों तक कभी-कभी शनिवार को दारू पीता था। जब भी मैंने पूछा यह जहर क्यों ? वह केवल मुस्करा देता था। उसकी मुस्कराहट में जीवन का एक अधूरापन झलकता था। एक दिन मैंने उसे दावत दी। दावत में मदिरा देवी को भी प्रस्तुत किया। आश्चर्य ! उसने मदिरा देवी को अस्वीकार कर दिया। इस अस्वीकरण से मेरे नयनों की गंगा प्रवाहित होने लगी क्योंकि मुझे उसमें पूर्णता की झलक प्रत्यावर्तित होती दिखाई दे रही थी।

एक माह बाद जब मैं उससे मिला तो उसकी गोधूलि मदिरा देवी की बाहों में मिली। मैं हैरान रह गया। मैंने उससे पूछा, यार ! तुम फिर जहर की नगरी में प्रवेश कर गये। उसने कहा, "भाई ! जीवन की गोधूलि में मेरी पूर्णता मुझे मिली। परन्तु वह पूर्णता अब मरघट की ओर ले जा रही है।" मैंने कहा, "भाई ! पूर्णता तो स्वस्थ जीवन की प्रतीक है, मरघट की नहीं"। उसके मुख से सरल भाव में सहसा निकल पड़ा। उसकी पूर्णता की प्रतीक थी पितृविहीन 38- वर्षीया एक कार्यशील बाला। घरेलू वातावरण और समाज ने उसे व्यवहार में तानाशाह बना दिया था। वह संगमरमर बन चुकी थी। वह चाहते हुए भी मोम नहीं बन सकती थी। उसकी भी मजबूरी थी और मेरा मित्र उस मजबूरी को समझते हुए भी अपनी पूर्णता को खोना नहीं चाहता था। इस संघर्ष में वह कमजोर पड़ गया और मदिरा देवी का पूर्ण आलिंगन कर लिया। आज वह शारीरिक और मानसिक रूप से मरघट की ओर बढ़ता जा रहा है। दारू से उसकी आत्म-शक्ति समाप्त होती जा रही है। इस स्थिति का इलाज दारू है ? सत्य को स्वीकार करके प्यार से सुखमय जीवन बिताना इसका इलाज नहीं है ?

"था सुधा में जब निमज्जित, क्यों गरल पीने चला मैं ?
बूझ दुनिया यह पहेली, जान कुछ मुझको सकेगी,
हो चुकेगा किन्तु इसके, पूर्व ही अवसान मेरा"।

अंजाम-ए-दारू की बात हो और हरिवंशराय बच्चन की अनदेखी कर दी जाय यह तो बेमानी होगी। बच्चन जी ने मधु, मदिरा, मधुशाला के अंजाम का हृदयस्पर्शी चित्रण अपनी रचना मधुशाला में किया है। उनके अनुसार अपनी क्षमता में पूर्ण विश्वास के विपरीत नियति के आगे मानव को असहाय बनाने में मदिरा पूर्णतः सक्षम है :



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मानव बल के आगे निर्बल, भाग्य सुना विद्यालय में,
भाग्य-प्रबल, मानव निर्बल का पाठ पढाती, मधुशाला"।

मदिरा अपने सेवकों को विवेक शून्यता की ओर ले जाती है :

"हिम्मत है न बढ़ूं आगे को, साहस है न फिरूं पीछे,
किंकर्तव्यविमूढ़ मुझे कर, दूर खड़ी है मधुशाला"।

विस्मरण का वचन देने वाली मदिरा स्वयं विस्मरण में रूपान्तरित हो जाती है और मृत्यु का पर्याय बन जाती है:

"यम आयेगा साकी बनकर, साथ लिये काली हाला"।

यमराज प्राण लेकर चल देते हैं और बच जाता है शव :

"मेरे शव के पीछे चलने वालो याद इसे रखना--
'राम-नाम है सत्य' न कहना, कहना 'सच्ची मधुशाला' "।

इस प्रकार मरघट और मदिरा में चोली और दामन का संबंध है :

"जगा करेगी अविरत मरघट, जगा करेगी, मधुशाला"।

आइए हम संकल्प करें :

"छोड़ा मैंने पंथ-मतों को तब कहलाया मतवाला,
चली सुरा मेरा पग धोने तोड़ा मैंने जब प्याला।
अब मानी मधुशाला मेरे पीछे-पीछे फिरती है, क्या कारण ?
अब छोड़ दिया है मैंने जाना मधुशाला"।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# मीना-मय-मरघट

मीना प्रकृति की एक खूबसूरत अभिशप्त देन। लम्बा उदर, लम्बी पतली गरदन, चमकता वक्षस्थल, नक्कासी का परिधान इसकी बाह्य पहचान है। इसके दो मुंह हैं। एक से "मय" को लेती है और दूसरे से उसमें सम्मोहन द्रव्य मिला कर आशिकों को देती है। इसकी तीन आंखें हैं। एक से अपनी "मय" की माया की ओर लोगों को आकर्षित करती है। दूसरी की छत्रछाया में उन्हें "मय" में डूबोकर तब तक रखती है जब तक शरीर खोखला न हो जाय। तीसरी आंख की देख-रेख में खोखला शरीर मरघट की ओर प्रस्थान करता है। इस प्रक्रिया को देखकर प्रकृति भी आंसू बहाने लगती है। काश ! मीना-मय के लुभावने जाल में प्राणी न फंसता। वह कितना महान होता ! गालिब के शब्दों में:

"ये मसाइले-तसुव्वुफ, ये तेरा बयान 'ग़ालिब'
तुझे हम वली समझते, जो न बाद ख्वार होता।"

"मय" मीना से बाहर आकर ज्यों गले से पेट में पहुंचती है, अपना करिश्मा-ए-जादू शुरू कर देती है। पेट से तुरंत खून में मिल जाती है। खून इसे शरीर के सभी अवयवों तक तुरंत पहुंचा देता है। परिणामत:, सभी अवयव अस्वाभाविक हरकतें शुरू कर देते हैं। इन अस्वाभाविक हरकतों का सम्यक वर्णन वाल्मीकीय रामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग- 42 श्लोक - 21 में किया गया है:

"रामस्यभ्य वहारार्थ किंकरास्तूर्ण महारत्
उपानृत्यंश्यराजानं नृत्यगीत विशारदा:।
अप्सरोरंगसंधाश्च किन्नरी परिवारिता:,
दक्षिण रूपवत्यश्च स्त्रिय: पानव शंगत:॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाकवि बिहारी ने "मय" से अभिशप्त नारी के लज्जाहीन अस्वाभाविक व्यवहार का अत्यन्त मार्मिक वर्णन अपनी सुप्रसिद्ध रचना सतसई में किया है :

"हँसि हँसि हेरति नवल तिय, मद के मद उमदाति।
बलकि बलकि बोलति वचन, ललकि ललकि लपटाति॥
लिपटि लजीली नवलतिय, बहकि बारूनी सेइ।
त्यों त्यों अति मीठी लगति, ज्यों ज्यों ढीढ्यों देइ॥
खलित बचन अधखलित दृग, ललित स्वेद-कन-ज्योति।
अरून बदन छवि मदन की, खरी छबीली होति॥"

"मय" का दावा है कि वह जीवन को मादकतापूर्ण बना देती है। मादकतापूर्ण जीवन लज्जाहीन होता है। लज्जाहीन जीवन अपने पीछे छोड़ देता है "पछतावा"। "पछताने" की प्रवृत्ति "हीन भावना" को उत्पन्न करती है। "हीन भावना" से मुक्त होने के प्रयास में "मयलोभी" मय के भंवर में फंसता जाता है। उसके जीवन में मय का जहर इतना घुल जाता है कि उसकी स्वाभाविक मस्ती समाप्त हो जाती है।

कवि नीरज़ के शब्दों में :

"शराब करके पिया उसने, ज़हर जीवन भर।
हमारे शहर में नीरज़-सा, कोई मस्त न था॥"

"मीना-मय" की कृत्रिम मादकता, मस्ती का आलम अच्छे-खासे जीवन को खाक में बदल देता है। उस खाक को हवा का एक मामूली झोंका गर्त तक पहुंचा देता है। गर्त से निकलने के प्रयास में शक्तिहीन प्राणी घुट-घुट कर दम तोड़ देता है और शरीर मरघट की ओर प्रस्थान कर देता है। ख्वाजा मीर "दर्द" के शब्दों में :

"ज़माने की ना देखी ज़र्रा, रज़ी "दर्द" कुछ तू ने।
मिलया मसल-ए-मीना, ख्वाक में खून हर शराबी का॥"

मीना-मय के विनाशकारी प्रभाव पर सुप्रसिद्ध शायर ग़ालिब ने भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है :



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"साबित हुआ है गरदने-मीना पै खुने-खुल्क ।
लरज़े है मौजे-मय, तेरी रफ़्तार देखकर ।।"

मानव के सर्वांगीण विकास का एक प्रमुख आधार सुखी दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन है । इसका सबसे बड़ा दुश्मन "शराब" है । शराबी परिवार में पति-पत्नी के व्यवहार व दृष्टिकोण में परस्पर दोषारोपण तथा अविश्वास की भावना घर कर लेती है । फलतः परिवार की मर्यादा, आर्थिक व सामाजिक स्थिति घटने लगती है । परिवार में क्रोध का बोलबाला हो जाता है । रात में पति चिल्लाता है और दिन में पत्नी । दोनों के इस व्यवहार के शिकार होते हैं बच्चे । यह बच्चे हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं और उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है । जिगर मुरादाबादी साहब के साथ भी ऐसा ही हुआ । उन्होंने सारे संसार और अपनी नैतिकता को "मीना-मय" में डूबोकर अपना दाम्पत्य जीवन नरक बना दिया था । वह आठो पहर "मीना-मय" में मस्त-अलस्त रहकर यही कहते थे :

"मुझे उठाने को आया है वाइज़े-वानां,
जो उठा सके तो मेरा साग़रे-शराब उठा ।
किधर से वर्क चमकती है देखे ऐ वाइज़,
मैं अपना ज़ाम उठाता हूं तू किताब उठा ।।"

परिणामतः जिगर साहब अधिक मदिरा पीने से हृदय के रोगी हो गये । मीना-मय के चक्कर में वह कई-कई दिनों तक भोजन नहीं करते थे । उनके फेफड़े, हृदय और आमाशय सबके सब मय के कारण विकृत हो गये । उ.प्र. के गोंडा जिले में 9 सितम्बर, 1960 को प्रातः जिगर साहब संसार से बिदा हो गये । यह है मय का करिश्मा ।

"दिल को सकून, रूह को आराम आ गया,
मौत आ गयी कि यार का पैग़ाम आ गया ।"

"मीना-मय" ने सुप्रसिद्ध महान शायर अब्दुल हमीद "अदम" को भी नहीं छोड़ा । उन्हें अपना गुलाम बना लिया । "अदम" का दूसरा नाम "मय" और "मय" का दूसरा नाम "अदम" हो गया । "मय" का हमेशा प्रयास रहा कि "अदम" का नशा उतरने न पाए । स्थिति यह हो गयी कि जब उनसे कहा जाता कि उनका यह "मैक़दे" का आशिकाना उन्हें कहीं का नहीं छोड़ेगा तो वह कह उठते :



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कौन कौसर तक मुसाफ़्त तैं करे,
मैक़दा फ़िरदौस से नज़दीक है।"

इस "मैक़दे" के आशिकाना ने "अदम" साहब को कहीं का नहीं रखा। उनका पारिवारिक जीवन तनावग्रस्त हो गया। पारिवारिक कलह बढ़ गया। उनकी पत्नी उनके इसी "मैक़दे" से प्रेम के क़ारण तंग हो गयी। एक दिन "अदम" साहब को छोड़कर चली गयी। "अदम" साहब अकेले पड़ गये। उनके चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा छा गया। "मय" की मायावी माया से बाहर निकलकर उनका साथी विहीन जीवन तड़प उठा और अन्त में "अदम" साहब को कहना ही पड़ा :

"साक़ी तुझे एक थोड़ी सी, तक़लीफ तो होगी।
सागर को ज़रा थाम, मैं कुछ सोच रहा हूं॥
पहले बड़ी रग़बत थी, तेरे नाम से मुझको।
अब सुनके तेरा नाम, मैं कुछ सोच रहा हूं॥
हल कुछ तो निकल आएगा, हालात की ज़िद का।
ऐ कसरते-आलाम, मैं कुछ सोच रहा हूं॥"

"मीना-मय" मानव से कहती है कि वह चिंताओं से क्यों मर रहा है। उसका आशिक बने, उसकी गोद में नशा से लिप्त, चिंता से मुक्त होकर शयन करे। क्योंकि चिंता से नींद बेहूदी नहीं आती। परन्तु आशिक यह भूल जाता है कि जीवन में चिर शांति, आनन्द, समृद्धि एवं ऐश्वर्य चिंता से संघर्ष के बाद ही मिलता है। "मय" के माया-जाल में मकड़ी बनकर रहने से न तो चिंता से मुक्त रहा जा सकता है और न ही स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति की जा सकती है। यह तो उसके दुखद चिर-निद्रा अर्थात् मौत का मार्ग प्रशस्त करती है। सुप्रसिद्ध हालावादी कवि हरिवंश राय बच्चन ने मय के इसी आश्वासन पर कटाक्ष करते हुए स्पष्ट रूप से कहा है :

"मैं कहां हूं और वह, आदर्श मधुबाला कहां है।
विस्मरण दे जागरण के, साथ मधुबाला कहां है॥
है कहां प्याला कि जो दे, चिर तृषा चिर तृप्ति में भी।
जो डूबो तो ले मगर दे, पार कर हाला कहां है।"



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मीना-मय" अपने प्रेमियों को बीते समय की सच्चाइयों एवं जीवन की वास्तविकताओं को भुलाकर सुखद भविष्य का वादा करती है। वर्तमान को हालामय बनाकर सुखद भविष्य का सपना दिखाती है। परन्तु मय प्रेमी भूल जाते हैं कि जीवन के प्रत्येक बिन्दु में भूत, भविष्य और वर्तमान साथ-साथ संयुक्त रहते हैं। भूत, वर्तमान के अन्दर "संस्कार" रूप में रहता है और भविष्य "सम्भावना" के रूप में। अत: भूत और वर्तमान के यथार्थ को भूल कर चिर सुख की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हरिवंश राय बच्चन जी के अनुसार :

"किया मैंने विस्मय हर "आज" कि मेरा हर "कल" हो मधुमान।
बताता जीवन का इतिहास, गलत निकला मेरा अनुमान॥
विफल है मेरा "कल" हर एक, मगर फिर भी "कल" एक पुकार।
यही कहता-मुझमें सम्भाव्य, तुम्हारे सब "कल" का प्रतिकार॥"

मेरे एक अभिन्न मित्र की एक मीना थी। "जीवन की गोधूलि में कौतूहल- सी" आकर उसका दामन पकड़े थी। मीना की भोली-भाली सूरत ने मोह लिया और वह मीना की गोद में बैठकर "मय" की माया में लिप्त हो गया। "मय" के प्रारम्भिक एक और दो दौर के बाद उसे आनन्द की अनुभूति होती रही। तीसरे और चौथे दौर तक पहुंचते ही उसके निर्णय लेने की शक्ति कम होती गयी। फलत: वह "मय" के दौर की मात्रा को बढ़ाता रहा। पांचवें-छठे दौर तक पहुंचते ही उसकी शारीरिक-मानसिक ग्रंथियों का परस्पर सहयोग समाप्त होने लगा। वह "मीना-मय" का पूर्णत: गुलाम बन बैठा। सातवें-आठवें दौर तक पहुंचते ही उसके शरीर में कम्पन होने लगी। वह खड़ा नहीं रह सकता था। अत: "मय" के सहारे ही खड़ा होने का प्रयास करता रहा। "मय" के दौर का दौर चलता रहा। पंद्रहवें दौर तक पहुंचते ही वह कभी-कभी अचेतावस्था में पहुंच जाता। दौर के इस दौड़ में मीना ने अपने मय के पच्चीस दौर तक उसे पहुंचा दिया। फलत: उसका शरीर खोखला हो गया और आज वह मरघट तक जाने के लिए तड़प रहा है। आज वह जिंदा रहते हुए भी मृतप्राय है। उसका परिवार अश्रुपूरित नेत्रों से आसमान की ओर देख रहा है कि शायद कोई चमत्कार हो जाय। परन्तु सब व्यर्थ। एक शायर ने ठीक ही कहा है :



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"है ये बदनाम और अभागन है,
ख़ूनी बरसात का ये सावन है।
जिसने मारा है कितने रुस्तम को,
वे सुनहरी बो एक ऩागन है ॥
पाप ही पाप इसके अन्दर है,
खा गई कितने मांग का सिंदूर,
हर बुराई इसी के अन्दर है ॥"

मीना बड़े गर्व से कहती है कि रुबाइयों के प्रसिद्ध लेखक उमर खैय्याम ने उसकी मधु में सराबोर होकर साहित्य के उस अंग की रचना कर डाली जो विश्व साहित्य के सम्पूर्ण शरीर में आज भी अपनी अलग से दिव्यमान चमक रखता है। परन्तु वह भूल जाती है कि अवध में नवाब और लखनऊ के शाह वाज़िद अली इसकी माया में लिप्त होकर सब कुछ भूल गये और अपने आप को मिटा डाला।

"मीना-मय" अपनी विध्वंसक शक्ति से अपने प्रेमियों के शरीर को बीमारियों से बचने के लिए आवश्यक प्रतिरोधात्मक शक्ति से विहीन कर देती है। सभी संक्रामक रोगों से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की संभावना कम कर देती है। आकस्मिक दुर्घटना का अवसर बढ़ा देती है। दुर्घटना हो जाने पर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की संभावना कम कर देती है। भावनात्मक तथा स्नायुगत नियंत्रण शक्ति को छिन्न-भिन्न कर देती है। आत्म- नियंत्रण की शक्ति को समाप्त कर देती है। जीवन को उदासीनता तथा एकान्तवास की ओर ढकेल देती है। फैज अहमद "फैज" के शब्दों में :

"अज़नबी ख़ाक ने धुंधला दिए, कदमों के सुराग़,
गुल करो शम्माएं बढ़ा दो मय-ओ-मीना-ओ अयाग़।
अपने बेख्वाब किवाड़ों को मुस्फल कर लो,
अब यहां कोई नहीं, कोई नहीं आएगा ॥"



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीना-मय अपनी लुभावनी माया से मानव को अभिशप्त कर, अपने पैरों पर नचा-नचा कर मरघट का मार्ग प्रशस्त करती है। आवश्यकता है आत्मबल की। अपने को इतना बुलंद करने की कि मीना-मय पैरों पर नाचे और उसे ठुकरा कर उसके वास्तविक विध्वंसक स्वरूप का अनुभव उसे करा दिया जाय। गालिब ने जीवन के आखिरी दिनों में ठीक ही कहा था :

"तोड़ बैठे जब कि हम, ज़ामों-सुबू, फिर हमको क्या ।
आसमां से बाद-ए-गुलफाम गर बरसा करें ॥"



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# किरातों की मीना—कल और आज

ईसा से दस शताब्दी पूर्व वेदों को संकलित किया गया जिनके अनुसार हिमालय तथा पूर्वोत्तर भागों में किरात नाम की एक अनार्य जनजातियों का समूह रहता था। यह जनजतियां प्रजाति के आधार पर इण्डो-मंगोलियन तथा भाषा की दृष्टि से ब्रह्मा-तिब्बती वंश की थीं। इस जनजाति समूह में मुख्यतः नेपाली, नागा, मेइतेई, बोड़ों तथा गारो जन- जातियां आती थीं। इन जनजातियों के लोग पर्वत वासी, आखेट जीवी, कंद-मूल फल भोगी, चर्म वसना तथा भयंकर अस्त्र-शस्त्र धारी थे। इन लोगो का देश के मैदानी भागों से गहरा संबंध था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार श्रीकृष्ण ने वर्तमान अरुणाचल प्रदेश के मिसमी जाति की कन्या रुक्मिणी से प्यार किया और शादी की। मणिपुर के गंधर्व राजा की पुत्री चित्रांगदा से अर्जुन ने गंधर्व विवाह किया था। इनसे बभ्रुबाहन की उत्पत्ति हुई। बभ्रुबाहन का पोता पंखगबा (जोबिस्ता) मणिपुर का प्रथम राजा हुआ। भीम नगालैंड के दीमापुर से हिडिंबा को ब्याह कर लाये थे। नगालैंड की राजधानी कोहिमा के पास खोनोमा गांव की नाग कन्या उलपी से अज्ञातवास के दौरान अर्जुन ने गंधर्व विवाह किया था। उलपी के गर्भ से अर्जुन का पुत्र ऐरावत उत्पन्न हुआ।

असम के राजा भगदत्त की रूपवती कन्या भानुमती का विवाह कौरव सम्राट दुर्योधन के साथ हुआ था। भगदत्त ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई में असंख्य किरात सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। बाद में भगदत्त इसी युद्ध में अर्जुन के हाथों मारा गया।

ऋषि -मुनियों की तपोभूमि मेघालय की गारो पहाड़ियों से बालपकराम नामक पहाड़ से हनुमान जी संजीवनी बूटी ले गए थे। असम के कामाख्या मंदिर का निर्माण गारो जनजाति के लोगों ने किया था। आज भी इस मंदिर में गारो महिला-पुरुष की मूर्ति है। इससे प्रतीत होता है कि किरात लोग हिन्दू धर्मावलम्बी थे तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं-कहीं इन पर हिन्दू धर्म का वर्चस्व था। कालान्तर में मैदानी भाग के हिन्दू धर्मावलम्बी इनसे पारिवारिक तथा सामाजिक अन्त:सम्बन्ध जारी नहीं रख सके।

छठी शताब्दी के प्रारम्भ में किरात जनजातियों का कुछ भाग बौद्ध धर्मावलम्बी हो गया। मुख्यत: वे लोग जो वर्तमान अरुणाचल प्रदेश की सीमा में रहते थे। अठारहवीं शताब्दी में अमेरिकन तथा ब्रिटिश मिशनरियों का आगमन इस क्षेत्र में हुआ। इन मिशनरियों के अदम्य साहस, त्याग, बलिदान तथा सेवा के कारण किरातियों का काफी भाग इसाई धर्मावलम्बी हो गया। इतना ही नहीं इन लोगों ने अपनी भाषा की अभिव्यक्ति के लिए रोमन लिपि को अपना लिया। किरात लोगों के पास अपार प्राकृतिक सम्पदा, अतुलनीय वास्तुकला तथा अनुकरणीय चित्रकला का भंडार है। इनका सौष्ठव, सुन्दरता, सरलता, ईमानदारी तथा उर्जस्व तेज और सहज परन्तु वीरोचित व्यक्तिगत जीवन स्वयं में एक उदाहरण है।

इन किरात जनजातियों की प्राकृतिक सौन्दर्यता, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन तथा परम्परागत समृद्धता का प्रमुख आधार मीना रही है। जीवन का अर्धनारीश्वर होते हुए भी यह लक्ष्मी कीं चंचला से दूर रही। इसका निवासस्थान दो से तीन फीट लम्बे परवों वाले पोला बांस का टुकड़ा रहा।यह अपने निवासस्थान से बाहर निकलते ही जीवन को आनन्द से भर देती थी। यह नि:स्वार्थ देवी अपने सेवकों के स्वास्थ्य, प्रसन्नता, सम्पन्नता तथा उनके दीर्घजीवन का ख्याल रखते हुए 'सम्भोग से समाधि' तक उनका साथ देती थी। मीना बिना किरात जीवन नीरस था।

बच्चों के नामकरण संस्कार में मीना की महत्वपूर्ण भूमिका है। अगर लड़के का नामकरण होना है तो उसका पिता एक नाम चुनता है। उसके बाद बांस या केन का धनुष - बाण बनाकर जमीन पर रख दिया जाता है। उसके बीच में लड़के का प्रस्तावित नाम लिख दिया जाता है। पिता की सहायता के लिए मीना आती है और अपनी मधु को गिराती है। यदि मधु उस नाम पर गिर गयी तो प्रस्तावित नाम ही रखा जायेगा अन्यथा नहीं। इसी प्रकार लड़की का नामकरण करते समय उसका प्रस्तावित नाम बांस या केन से बना थापा के बीच लिख कर रख दिया जाता है। मीना अपनी मधु गिराती है और अगर नाम पर मधु गिर गयी तो प्रस्तावित नाम रखा जायेगा अन्यथा नहीं। यहां की मीना इतनी महान है कि उसे बच्चों के नामकरण करने का पूरा अधिकार प्राप्त है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरातों के विवाह की अपनी विशिष्ट परम्परा है। लड़के - लड़की एक दूसरे को स्वयं पसन्द करते हैं। इसके बाद वर का पिता अपने बुजुर्गों के साथ कन्या के घर मीना को बतौर उपहार लेकर जाता है और यदि कन्या पक्ष के लोग मीना को स्वीकार कर लेते हैं तो शादी की बात विस्तार से शुरू होती है, अन्यथा नहीं। मीना की हार्दिक स्वीकृति प्राय: शादी तय हो जाने की मधुर सूचना मानी जाती है। शादी के समय वर पक्ष वाले कन्या के घर जाकर मीना तथा इसकी भगिनी "मांस" का आनन्द उठाते हैं। इस तरह शादी - विवाह में भी मीना प्रमुख भूमिका अदा करती है।

किरात समुदाय में मृत्यु के बाद आत्मा की शान्ति मीना के ही हाथों होती है। जड़ी-बूटियों से मिश्रित गर्म जल से सर्वप्रथम मृतक के शरीर को घर के सदस्यों द्वारा धोया जाता है। तत्पश्चात् उस शरीर को लकड़ी के तख्त पर रख कर कपड़ों से ढक दिया जाता है। उसके द्वारा इस्तेमाल किये गये हथियार, आभूषण आदि उसके बगल में रख दिए जाते हैं। मृतक के परिवार द्वारा "मांस" और मीना का मधु नात-हित, मित्रों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भर पेट खिलाया और पिलाया जाता है। रिश्तेदार भी अपने साथ चावल, मांस और मीना को उपहार स्वरूप लाकर मृतक के परिवार के सदस्य को देते हैं। इस उपहार का सेवन मृतक का परिवार करता है। चावल, मांस और मीना का मधु मृतक के सिरहाने रख दिया जाता है। दो दिन बाद मृतक को कॉफिन में रख कर दफन कर दिया जाता है। कब्र के पास मीना के मधु का तर्पण किया जाता है। यहां की मीना कितनी सौभाग्यशाली है, जिसे समाधि तक सेवा का अवसर मिलता है।

ग्राम्य देवता तथा मन्दिरों में स्थित देवता को भी प्रसन्न रखने का प्रमुख दायित्व मीना का है। मेघालय में जेठ के महीने में "पौम-ब्लांग" त्यौहार का अनुष्ठान पुरोहितों द्वारा सम्पन्न होता है। पन्द्रह दिन पहले से पूजा की जगह बलूत वृक्ष के बने स्तूप के आगे बकरे बांध दिये जाते हैं। पुरोहित उस जगह प्रतिदिन मीना का मधु तर्पण करते हैं। पूजा के निर्धारित समय पर मुर्गे तथा बकरों की बलि चढ़ाई जाती है। इसके बाद मीना मधु का आचमन करके लोग हंसते, गाते, नाचते अपने-अपने घर जाते हैं। इस तरह किरातों के धार्मिक जीवन में मीना का अपना एक विशिष्ठ स्थान है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरातों की मीना के अनेक नाम हैं। अरुणाचल प्रदेश में 'सीवांग-फोवा', 'निगाब-फोवा', 'ओलो', 'फूमी', एवं नागालैंड में 'जू' तथा मेघालय में 'काक्याट', 'छबक', 'यू', 'हरलांग', 'चू' और मणिपुर में 'जोयू' आदि नामों से जानी जाती है। नाम अनेक, व्यवहार एक। यह भी तो उसकी महानता है। अधरों के स्पर्श मात्र से आंखों में हल्की लाली तथा खून में मिलते ही दिमाग पर हल्की-सी किक इसकी पहली पहचान है। इसके पवित्र आंचल की छाया में यहां के लोग सभी दुःखों को भूल कर नाचते, गाते और प्रकृति के मनमोहक वातावरण में प्रकृति मय हो जाते हैं। कारण स्पष्ट है। मीना की मधु में 'अलकोहल' की मात्रा 4 से 5 प्रतिशत होती है। इसमें विटामिन 'बी' समूह काफी मात्रा में होता है। इसलिए यह मीना स्फूर्ति तथा जीवनदायनी शक्ति से परिपूर्ण है।

यह मीना कौन है? इसका अवतरण कैसे हुआ? यहां के किरातों के हाथ कैसे लगी? यहां के लोग आकाश को पिता तथा पृथ्वी को मां मानते हैं। यहां परिवार के सभी सदस्य पहाड़ों पर तथा पहाड़ों की तलहटी में दिन भर खटते रहते हैं, जड़ी-बूटी खोदते रहते हैं तथा शिकार करते-करते थक जाते हैं। प्रकृति से रात-दिन संघर्ष में टूट जाते हैं। माँ ने उन्हें स्वप्न दिया कि वे लोग जीवनदायनी संजीवनी शक्ति मीना का अवतरण करें। साथ में यह भी बताया कि मीना का अवतरण केवल महिलायें या कन्यायें, जब रजस्वला न हों, तभी कर सकती हैं, अन्यथा उनके गाल व जीभ सूज जायेंगे।

कुछ महिलाओं ने लोहे के बरतन तथा कुछ ने पीतल के बरतन में चावल को उबाला। उबले चावल को बांस की फट्टी पर तीन-चार दिन सुखाया। उसमें कुछ जड़ी-बूटी मिलाया। पुनः हरे-हरे पत्तों से ढ़क दिया। तीन दिन बाद एक मिट्टी के बर्तन में चावल को रखा और गरम पानी डालकर बर्तन का मुंह बांध दिया। चावल रो पड़ा। वह फूल कर ऊपर आ गया तथा उसका खट्टा-मीठा आंसू नीचे रह गया। बर्तन का मुंह खोला, छाना तथा चावल के आंसू से उत्पन्न मीना को बांस के पोले भाग में रख दिया। मीना अपने इस नव जीवन को पाकर प्रसन्न हो उठी। दर्द से उत्पन्न वस्तु की अपनी ही कहानी होती है। अवतरण कर्ताओं के प्रति सम्मान प्रगट करती मीना उनकी सेवा करने तथा नव स्फूर्तियुक्त जीवन देने के लिए आतुर हो गयी। मीना के अवतरण की इस कथा के संदर्भ में महाकवि पंत जी की यह



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उक्ति समीचीन है कि : "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। निकल कर आंखों से चुपचाप, बही होगी कविता अंजान ॥" किरातों के प्राकृतिक जीवन में मीना का अवतरण भी एक सुमधुर कविता के रूप में हुआ।

इस हिम प्रदेश की यह विशेषता है कि परिवार के सदस्य खेती करते, बागवानी करते समय, मछली पकड़ते समय अपने साथ मीना को अवश्य रखते हैं। इतना ही नहीं। इस दौरान दूसरे परिवार का अगर कोई सदस्य आ जाय तो उसका स्वागत मीना के मधु से होता है। सायंकाल जब लोग थके-मांदे घरों पर आते तो मीना पूरे कबीले को अपने मधुर मधु का पान कराती और पूरा कबीला प्रसन्न चित्त भाव से नाचता, गाता और रंगरेलियां मनाता है । उनका नृत्य व संगीत...हूं...ऊं...ऊं...से शुरू होता है और ...हाउ...हाउ...होउ पर समाप्त होता है । इतना ही नहीं, मीना यहां के आतिथ्य सत्कार, संस्कृति, रीति-रिवाज का अभिन्न अंग बन गयी है। किरात लोग मीना की मधुर मधु दूसरों को पिला कर बड़प्पन महसूस करते हैं और अगर किसी ने मीना के मधु का पान करने से इंकार कर दिया तो बुरा मानते हैं।

किरातों को मीना के मधु से इतना लगाव है कि प्रातः उठते ही इसे ग्रहण करते हैं। दोपहर में ख़ाना खाने के तुरंत बाद इच्छा भर इसको गले के नीचे उतारते और काम पर जाते हैं । जंगलों को जलाकर सीढ़ीनुमा झूम खेती से थक कर सायं पूरा परिवार एक साथ मिलकर इस मधु का पान करते, नाचते-गाते और थकान दूर करते हैं । इस आनन्द को देखकर मीना खुशियों से पागल हो उठती। इतना ही नहीं, चाहे कोई धार्मिक त्यौहार हो या दावत, मीना के मधु के बिना सम्पन्न ही नहीं होता। इन अवसरों पर जो जितना अधिक मधु का पान कराता वह उतना ही अधिक प्रतिष्ठित माना जाता है । किरातों की प्रतिष्ठा का आधारशिला मीना से ही नव आगन्तुकों का स्वागत किया जाता है ।

अंग्रेज तथा अमरीकन मिशनरियों के साथ कुछ अंग्रेज व्यापारियों का भी आवागमन इस क्षेत्र में तिब्बत के रास्ते से हुआ। परम्परागत रूप से मीना के मधुर मधु से उनका स्वागत किया गया। मीना की निःशुल्क सेवा को देखकर अंग्रेज व्यापारी हतप्रभ रह गये। उनकी भौतिकवादी लक्ष्मी तड़प उठी। इन व्यापारियों ने मौके का फायदा उठाया। व्यापार हित में मीना की अच्छाइयों के स्थान पर उसकी



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्पित बुराइयों का प्रचार किया। कुछ को प्यार से, कुछ को लालच देकर और कुछ को बलपूर्वक 'लाल-चाय' पीने को बाध्य कर दिया जिसकी 'न्यूट्रिसनल वैल्यू' मीना की जीवनदायनी शक्ति से जहां शत-प्रतिशत कम थी, वहीं स्वाद में तीखापन ज्यादा। कुछ समय बाद व्यापारिक हित में मीना का रूप परिवर्तित करके 'रम' और 'ह्विस्की' जैसी मीना को अवतरित किया गया तथा किरातों के सरस जीवन में जहर घोल दिया गया।

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान इस जीवनदायनी मीना के मधु को, व्यापारिक हित में, विषाक्त कर दिया गया। मानव, मशीन तथा आग से 45 से 48 प्रतिशत अलकोहल मिश्रित मीना का अवतरण हुआ। अवतरित होते ही यह बाज़ार की वस्तु हो गयी। ठेकेदारों के हाथों बिकने लगी। इसकी चन्द्रमा-सी शीतलता अग्नि की प्रचंड ज्वाला में परिवर्तित हो गयी। व्यापारियों द्वारा अवतरित तथा ठेकेदारों द्वारा विक्रय की जा रही मीना अपने शांति, सहयोग व जीवनदायनी शक्ति को समाप्त कर विध्वंसक रूप धारण कर चुकी है। इतना ही नहीं वह 'अपने और पराये' का निर्णय करने में असमर्थ हो चुकी है। उसे गर्व हो गया है कि वह शासन को अच्छा-खासा धन उपलब्ध करा रही है। उसे मानव हित से क्या लेना देना। शायद उसे नहीं मालूम कि जितना वह शासन को धन उपलब्ध कराती है उससे कहीं अधिक धन शासन उससे उत्पन्न बीमारियों पर खर्च कर रहा है क्योंकि आज की मीना की मधु भी 'ड्रग एब्यूज़' बन चुकी है। वस्तु स्थिति यह है कि आज की नगरीय मीना अपनी नियंत्रण शक्ति खो चुकी है। जब कभी हिम प्रदेश की पवित्र धरती पर मानवता के रक्षक के रूप में उसके पूर्व के निःस्वार्थ योगदान की स्मृति करायी जाती है तो वह तड़प उठती है और असहाय-सी कहती है; "देख सुधा" !

सुधा क्या देखेगी ? उसकी अपनी अलग दुनिया है। उसे तो सभी गले लगाते हैं अलावा भगवान शंकर के। उन्हें तो केवल प्राकृतिक मीना स्वीकार्य है। नर-मुंड धारिणी काली के क्रोध से मानव को बचाने के लिए भगवान शंकर को जमीन पर सोना पड़ा। मां काली के पैरों के बोझ को सीने पर सहन करना पड़ा



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताकि मानव जाति की रक्षा हो सके। आज भौतिकवादी दृष्टिकोण से परिपूर्ण लक्ष्मी वाहन मीना 'एक ड्रग एव्यूज़' बन कर सर्वनाश करने पर आतुर है। शायद भगवान शंकर इस हिम प्रदेश के इस भयानक भावी नर संहार की अनुभूति करते हुए भी "प्रतिक्षा करो" की आधुनिक नीति का अनुसरण कर रहे हैं। आखिर कब तक ? शायद वह अपने भक्तों की परीक्षा ले रहे हैं, विशेष रूप से उस समय जब वह भौतिकवादी शहरी मीना के मय से संत्रस्त होता जा रहा है। उसके मायावी शिकंजे से वह बाहर निकलने को तड़प रहा है, परन्तु असमर्थ है ?

आज मीना के मधु की विध्वंसक प्रवृत्ति को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यह जीवनघाती मधु पेट में जाते ही भूख मार देती है। भोजन करने तथा पचाने की न्यूनतम शक्ति को कम कर देती है। शरीर के लिए अतिआवश्यक प्रोटींस तथा विटामिंस की मात्रा क्रमशः घटाती जाती है। गुर्दे को इतना क्षतिग्रस्त कर देती है कि मुंह से खून भी आने लगता है। सम्भोग की शक्ति पर इस कदर कुठाराघात करती है कि वैवाहिक व पारिवारिक जीवन कष्टप्रद हो जाता है तथा आत्मविश्वास की कमी हो जाने से आत्महत्या की प्रवृत्ति को असाधारण बल मिलता है। दिल और दिमाग को विकृत कर देती है। दिल की गति इतना बढ़ा देती है कि यह पता नहीं लगता कि दिल अपनी धड़कन कब बंद कर दे। मानसिक स्नायुओं को झकझोर कर रख देती है। मस्तिष्क इतना कमज़ोर हो जाता है कि वह अपना संतुलन तथा एकाग्रता की शक्ति को व्यवस्थित नहीं कर पाता। इसके कारण कभी-कभी आत्म नफरत की भावना बलवती हो जाती है। मांस पेशियों में भयंकर दर्द होने लगता है। इस दर्द को दर्द-निवारक दवा भी दूर नहीं कर पाती। पूरा जीवन ही अस्त-व्यस्त हो जाता है। ऐसी विकट स्थिति में यदि मीना के मधुपान को नियंत्रित नहीं किया गया तो मानव जीवन की समाधि यात्रा अवधि दुःखद रूप से कम हो जायेगी।

मीना को पूर्व में अवतरित करने वाली किरात बालाओं ने इसके वर्तमान परिवर्तित विध्वंसक स्वरूप को नियंत्रित करने के लिए कमर कस ली है। नगालैंड और मिजोरम की बालाओं ने अपने राज्यों में जन आन्दोलन चलाया और काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की। जयंतिया हिल्स की महिलाओं ने भी अपना प्रयास



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेज कर दिया है। मदर्स यूनियन, तुरा ने इस विभीषिका को कम करने के लिए बृहद् आंदोलन चला रखा है। मेघालय अपर माप्रेम वुमेन वेलफेयर एसोसिएशन, शिलांग की सदस्याओं ने सड़कों पर सायं 7.30 बजे मीना के मधु को पान करने वाले व्यक्तियों को पकड़कर उठक- बैठक कराने लगी हैं। लोगों का कहना है कि एक या दो पेग के लिए महिलाओं के हाथ वे बेइज्जत होना नहीं चाहेंगे। कल की मीना के परिवर्तित स्वरूप से संघर्ष करना होगा तथा मीना की अवहेलना ही सुधामय जीवन का मार्ग प्रशस्त करेगी।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# बुद्धू बंजारा

अरुणाचल प्रदेश की राजधानी इटानगर। प्रकृति की अनुपम व मनोहारी सौन्दर्य की सुरम्य स्थली। चतुर्दिक हरितमा को चार-चाँद लगाती रंग-बिरंगे पुष्पों से लदी डालियाँ। कोहरे से ढ़के जल प्रपात। चारों ओर घोर सन्नाटा। परन्तु रह-रह कर आता कीड़ों का मधुर संगीत। सुख और दुःख की यादों के बीच व्यतीत रात्रि। मेघालय में प्राप्त अस्वस्थ जीवन में शक्ति ढूंढने का प्रयास। सफलता और असफलता के झूले पर झूलता शरीर। शान्ति की मृगतृष्णा में भटकती आत्मा। तन-मन के पारस्परिक असहयोग से उत्पन्न अशान्ति का परिहास करती निद्रा देवी। एकाएक "मिस्टर राय" की मधुर आवाज़। बिजली के झटके से उठा शरीर। कानों में प्रतिध्वनित हो रही "मिस्टर राय" की जानलेवा आवाज। अतीत का वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण। जीवन की पलायनवादी प्रवृत्ति से संघर्ष का संदेश। संदेश - दात्री की भौतिकवादी दुनिया में कष्ट के अनुभव पर प्रश्न चिह्न ? अध्यात्मिक जीवन से भौतिक जीवन में प्रवेश कर सुख व दुःख के दोराहे पर खड़ी यह मुद्राकृत प्रतिमूर्ति आज कहां से आवाज दे रही है ? उसने तो कहा था, "भौतिकवादी तथा उपभोगवादी संस्कृति के अन्तर्गत वह स्वर्णिम जीवन व्यतीत कर रही है"। फिर अचानक आवाज क्यों ?

गेस्ट हाउस से बाहर निकल कर आसमान में उसका प्रतिबिम्ब देखने का असफल प्रयास। परन्तु दैविक संदेश की प्राप्ति। आकाश के काले-भूरे बादलों का सूर्य को ढकने का अहंकारी प्रयास। सूर्य को आभाहीन करने का भगीरथ प्रयत्न। सूर्य की स्वाभाविक मुस्कान। बादलों की अप्राकृतिक हठधर्मिता ! परिणाम ! तीव्र वायु की उत्पत्ति। वायु की क्रोधाग्नि से सेमर की रुई की तरह फटता और बिखरता बादल। पश्चाताप स्वरूप अहंकारी बादलों के गिरते आंसू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा मां वसुन्धरा का अपनी पवित्र गोद में उन आंसुओं को समेटना... । वह मां जो है ! सूर्य अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ चारों दिशाओं को करता देदीप्यमान । एक संदेश । काश ! वह अपनी अध्यात्मिक शक्ति को बरकरार रख पाती । दु:ख के क्षणिक मायावी बादल उसकी आभा को ग्रस्त नहीं कर पाते । और उसे आवाज नहीं देनी पड़ती । अध्यात्मिक जीवन में यदा-कदा कलयुगी मौद्रिक तूफानों का आगमन तो होता ही है परन्तु विनम्रता से उस तूफान को जाने दिया जाय । यही सार्वभौमिक सत्य है । सागर ने नदी से पूछा कि वह अपने साथ विशाल वृक्ष बहाकर लाती है, परन्तु हरी-भरी घासों का समूह नहीं ? नदी का उत्तर था कि वृक्ष उसकी धारा की तीव्रता का परिहास उड़ाते खड़े रहते हैं । अत: वे उसकी गोद में गिर कर उसकी धारा के साथ बहते-बहते समुद्र के खारे पानी में समा जाते हैं, परन्तु हरी-भरी घास उसकी तीव्रता का स्वागत करती हैं और विनम्रता के साथ झुक जाती हैं । फलत: वह उन्हें अपने साथ बहाकर नहीं लाती । यही जीवन का रहस्य भी है । काश ! वह अपनी मातृ सुलभ विनम्रता, सहनशीलता और पर-सेवा से युक्त अध्यात्मिक आनन्द को बिखेरकर मानव के सम्पूर्ण कल्याण में रम जाती ?

गेस्ट हाउस के केयरटेकर की आवाज , "साहब ! लाल चाय" । ध्यान भंग । लाल चाय के दो कप हलक के नीचे । उस में भी आवाज देने वाली की छाया को ढूंढने का असफल प्रयास । चिंतित मन और अस्वस्थ शरीर के सामजंस्य से सम्पन्न दैनिक क्रिया । केयरटेकर का चिकित्सक बुलाने का प्रयास । अधरों पर विषाद की तैरती रेखा । इलाज़ चिकित्सक के हाथ में नहीं ।...चल पड़ा अरुणाचल के मूलवासियों के गांव की ओर । मारुति जीप के हर झटके से भंग होता ध्यान । नदी के किनारे जीप रुकी । दो जुड़ी नावों पर जीप सवार । नदी धारा की श्वेतता में आवाज-दात्री का प्रतिबिंब ढूंढ़ने का लगातार प्रयास । परन्तु प्रतिबिम्ब के स्थान पर नदी का अट्टहास ।" वंजारे ! उपभोग- वादी मुद्राकृत ढांचे को मत ढूंढ । बरबाद हो जायेगा । अध्यात्मजीवी का उपभोगवादी विकार से दूर रहने में ही कल्याण है । आगे मत सोच ।... भाग्य और कर्म के संघर्ष में विजयी होने का प्रयास कर ।" याद आयी सुधा की ! जिसने बंजारे के इस पागलपन का कई अवसरों पर विश्लेषण किया । जीवन का संदेश दिया । सुधा ! नर-नारी और नारायण की



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन-दात्री जो ठहरी । अब तो वह भी मान गयी है कि बंजारे की धुन ही उसका पागलपन है, उसका आवारापन है और उसके अहिंसक सरल जीवन की परिभाषा भी ।. . . कुछ मानसिक शांति मिली । शरीर में सजीव रक्त संचार हुआ । आगे चला . . . चलता रहा ।. . . ढूंढता रहा प्रतिबिंब को... । पर व्यर्थ ।

पर्वत की तलहटी में बहती नदी की तीव्र धारा । चट्टानों से टकराती धारा की कर्ण- भेदी आवाज । धारा की नग्नता को श्वेत आंचल से ढ़कते हुए उसका भाई मेघ पुत्र । तलहटी के ऊपरी किनारे पर काली सर्पिणी-सी थिरकती सड़कें । चारों ओर लम्बे-लम्बे हरे वृक्ष । लताओं का चुम्बन करती मेघ बालायें । बीच-बीच में पत्थर के नंगे टुकड़े परिधान की तलाश में । चतुर्दिक सौन्दर्यता की चुम्बकीय शक्ति । हरे परिधानों में लिपटी, रंग-बिरंगी पुष्पों का आभूषण पहने तथा माथे पर सूर्य की बिन्दिया लगाये पर्वत सुन्दरी मन को आकर्षित कर लेती । कामदेव के बाणों से वातावरण को शिवमय बनाता प्राकृतिक सौन्दर्य । परन्तु आवाज-दात्री का अभाव । बार-बार "मिस्टर राय" की आवाज आकर दिल की धड़कनों को बढ़ा देती । बंजारा तन-मन को समायोजित कर यात्रा आगे बढ़ाता रहा ।... जीप चलती रही...मन दौड़ता रहा । जीप झटके के साथ लाल कीचड़ को पार कर रुकी । नीचे उतरा । निशी समुदाय के प्रमुख ने मित्रता का हाथ बढ़ाया । हाथ मिला । चेहरों पर प्रसन्नता नृत्य करने लगी ।... छोटे से समूह के साथ गांव में प्रवेश किया । ग्राम प्रमुख ने घर में चलने का हार्दिक निमंत्रण दिया ।

पाँच फीट आठ इंच की लम्बाई, सर पर भगवान शिव की जटा, जटा से चोटी तक बंधी विशाल पंछी की चोंच तथा कमर में डेढ़ फीट का लटकाया तलवार सदृश्य "दावों" और रंग-बिरंगे परिधान से सुसज्जित बत्तीस वर्षीय निशी युवा द्वारा घर के अन्दर चलने का निमंत्रण । लकड़ी के ख़म्भों पर बांस तथा केन से सुसज्जित और जमीन की सतह से पांच फुट ऊपर बना मकान । घर के अन्दर जाने के लिए पोले बांस की जगह-जगह अधकटी सीढ़ी । उसी के सहारे घर में प्रवेश । सतह लचकीली । घर की लम्बाई 15 मीटर तथा चौड़ाई लगभग 10 मीटर । बांस तथा केन से निर्मित तीन कमरे । हर कमरे के बगल में बना चउका । हर चउके में सुलगती आग । दो चउके में पक रहा चावल । कुल तीन चउका । विचित्र सुगंध । दूसरे चाउके के पास आसन लगा । पारम्परिक वेष-भूषा में प्रातःकालीन सूर्य की तरह आभा बिखेरती एक निशी बाला का आगमन । चेहरे पर तेज । हृदय में



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शशि का स्नेह । हाथ में सूखी लौकी का एक बरतन । खौला कर ठंडा किये गये और ओपोक जड़ी से मिश्रित ज्वार को लकड़ी के लाल डंडे से हिला कर केन से बने एक गोलाकार बर्तन में रखा । लोहे से बने तीन डंडों के एक ढ़ाचे के अन्दर ज्वार को स्थापित किया । उसके नीचे एक खाली बर्तन । लौकी के बरतन से खौलता पानी ज्वार में डाला ।...बांस के कप में छना द्रव... । मधुर मुस्कान के साथ आगे बढ़ाया । निशी युवा का आग्रह, "पेय पदार्थ ओपांग को ग्रहण कर आतिथ्य स्वीकार किया जाय ।"...सहर्ष मौन स्वीकृति...ओपांग का स्वागत ।

मक्खन निकाला दूध की तरह स्वाद । महक ताड़ी की तरह । रंग ताड़ी से गहरा सफेद । ओपांग ने अपना जलवा दिखाया । शरीर में थोड़ी - सी गर्मी । मानसिक स्नायुओं को हलकी-सी किक के साथ व्यवहार में अपनत्व का प्रवेश ।...तीन चउके मूक संदेश दे रहे थे कि इस युवा की तीन पत्नियां हैं...तीन पत्नियों का आगमन इस बात की ओर संकेत कर रहा था कि समृद्धि का प्रतीक मिथुन की अधिकता ।...कबीले की संख्या बढ़ाने का प्राचीन प्रयास ।... ओपांग एक महाऔषाध, जिसके पान से दुःख भूल जाता है...आनन्द की प्राप्ति होती है । प्रातः और रात्रि भोजन के मध्य का जीवन-साथी । इनके मूल देवता डोनी-पोलों (सूर्य तथा चन्द्रमा) ने पहला व्यक्ति "आबोतानी" को पृथ्वी पर भेजा । आबोतानी ने बीज और कृषि कला दी । स्त्रियों को ओपांग बनाने का विज्ञान दिया, ताकि इनके संघर्षमय जीवन में नव शक्ति सृजित होती रहे । ओपांग आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता । अन्य पदार्थों की तरह भूमि से स्वयं पैदा किये गये पदार्थों से बनता है ।... शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव डालता है ।...सामूहिकता की भावना का ज्ञनक है ।

ओपांग की मधुर मधु ने तार्किक शक्ति को गतिशील किया । चावल, मक्का, ज्वार, जौ, महुआ तथा अंगूर आदि स्वयं में नशीले नहीं होते । इनका स्वाभाविक धर्म तो ऐसा नहीं है ।... फिर इन खाद्य पदार्थों में ऐसी धर्मिता कहां से ? वस्तुतः पहले इनकी स्वाभाविक धर्मिता को परिवर्तित किया जाता हैं । इन्हें सड़ाया जाता है । बाद में जड़ी- बूटी मिश्रित की जाती है । परिणामतः इनके गर्भ से नशीला पेय पदार्थ (ओपांग) निकाला जाता है ।...पदार्थों की स्वाभाविक प्रकृति से पूर्ण भिन्न ।...यह पेय आनन्द एवं आन्तरिक इन्द्रियों को उत्तेजित करता है जिसके सहारे मानसिक स्तर को भौतिक धरातल से ऊपर उठने में सहायता मिलती है ।...पान



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने व ले व्यक्तियों के ऊँचे उद्देश्यों की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। परन्तु यह गुण मीना में कहाँ ? वह तो लक्ष्मी वाहनों द्वारा आग पर तपा कर निकाली गयी है। मानव की छुद्र लिप्सा की जीती - जागती तस्वीर मीना ! यह ऐसे नशीले पेय पदार्थ का रूप ले चुकी है जिसका पान पतन का ही मार्ग प्रशस्त करता है। वह मानव को प्रेरित करती है कि जब तक आंख, चेतना, वाणी और शरीर अस्थिर नहीं हो जाते, उसका पान करता रहे ताकि उसके जनकों को आर्थिक लाभ होता रहे।...आध्यात्मिक आदर्शों की बात तो दूर रही, भौतिकवादी उपभोग उन्मुख सभ्यता की मलिका बनकर वह मानव कल्याण का गर्भपात गर्व से करा रही है। सुधामय जीवन को शाश्वत बनाने की मनोवृत्ति को समाप्त कर चुकी है। सहसा एक दिव्य स्वर के साथ ध्यान टूटा।...

बंजारा आगे बढ़ा। गाँव के दूसरे छोर पर स्थित घर। पारम्परिक स्वागत। असमी भाषा में ओपांग लाने का मधुर आदेश। निशी बाला ने प्राकृतिक सौन्दर्यता और सौम्यता के साथ ओपांगं को आगे बढ़ाया।...ग्राम प्रमुख श्री तानी के सौ-वर्षीय पिता राष्ट्रपिता गांधी तथा स्वर्गीय इन्दिरा गांधी के जनजातीय दृष्टिकोण की प्रशंसा करने लगे।...इन महान विभूतियों को क्रमशः ईश्वर के पुत्र तथा पुत्री के रूपं में अवतरित होने की ब़ात कही।...वह बार-बार नतमस्तक हो जाते।...बात आगे बढ़ी। सबने ओपांग को हलक के नीचे उतारा।...ओपांग इन लोगों के लिए पवित्र वस्तु है। उनके शरीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यह तन और मन के अन्तःसम्बन्धों को प्रगाढ़ करता है। शरीर को जाड़े में ठंड से, गर्मी में गरम से रक्षा करता है। बवासीर, तपेदिक तथा उदर विकारों से मुक्ति दिलाता है।...श्री तानी एक पर्व पर दिल्ली गये। वहाँ उनका स्वागत हुआ। परन्तु ओपांग का अभाव। उनके एक मित्र ने दिल्ली की मीना को पेश किया। मीना के तीखे रस का रसास्वादन।...उनका स्वास्थ्य खराब। मानसिक संतुलन में विकार। दिल्ली की मुद्राकृत मीना उन्हें रास नहीं आयी। "...इस मीना को अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश नहीं होने देंगे।...यह हमारे शांत और सुखमय जीवन में जहर घोल देगी।" ...खुदा का शुक्र है कि इस प्रदेश में मीना के आगमन पर निषेध है।...प्रदेश की प्रगति का रहस्य भी। अध्यात्मिकता और भौतिकता से पूर्ण समायोजित नैसर्गिक रूप से सम्पन्न प्रदेश के सरल व सुखमय जीवन का आधार भी।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलन से वियोग तक तो मीना साथ नहीं देती परन्तु ओपांग साथ निभाता है। विवाह तय करने के लिये वर पक्ष के लोग वधू के घर ओपांग तथा चावल लेकर जाते हैं। वधू पक्ष की ओपांग स्वीकृति विवाह माना जाता है। वधू पक्ष के लोग उस रात सामूहिक रूप से ओपांग के आनन्द से आनन्दित होते हैं। बीच-बीच में वर वधू के घर ओपांग पहुंचाता रहता है। शादी के समय बारातियों का स्वागत ओपांग करता है। वर के घर वधू के पहुंचते ही पूरा गाँव चावल व ओपांग का भरपूर आनन्द लेता है।...सृष्टि के नव प्रतिनिधि के आगमन पर पूरा गाँव सामूहिक रूप से चावल, मुर्गी तथा ओपांग का सेवन करता है।...ओपांग की प्रेरणा से सभी नवजात शिशु को आशीर्वाद देते हैं। पूज्य देवता डोनियों-पोलो (सूर्य और चन्द्रमा) से शिशु के स्वास्थ्य, सम्पन्नता और दीर्घ जीवन की प्रार्थना करते हैं।...जीवन चक्र का अन्तिम बिन्दु है मृत्यु—चिर शान्ति। इस वियोग के क्षण ओपांग सभी का दुःख कम करता है।...सभी लोग मृतक का नाम लेकर प्रार्थना करते है: "पूर्वजों की आत्मा के साथ वह जाकर रहे।...उसकी यात्रा शान्तिपूर्ण व सुखद हो।...उसका पुनर्जन्म न हो।" केले के दोने में प्राप्त ओपांग जठराग्नि के हवाले...। हठात् ब्रह्मर्षि वंश का सपूत, जो मुझे यार कह कर सम्बोधित करता था, स्मृति पटल पर आ गया। वह जन्म से मृत्यु तक दूसरों के ही काम आया। कितनों की शादी कराया। कितनों को नौकरी दिलाया। कितनों की आर्थिक सहायता की। उसका जीवन ही त्यागमय था। उसने जीवन की अंतिम घड़ी में कहा था "मेरे यार ! मीना की मधु से दूर रहने की सलाह ब्रह्मर्षि वंश को दो।...इसके प्रवेश को रोको। कोई और ब्रह्मर्षि वंश बरबाद न हो"। कितना महान था वह सपूत।...वास्तव में वह दीनों का नाथ था। श्रद्धा से सर झुक गया।... एकाएक निशी बालकों की स्वाभाविक, पर विचित्र आवाज से ध्यान टूटा। ओपांग रंग लाया। यहाँ के मूल वासियों के त्यौहरों में ओपांग की प्रमुख भूमिका है क्योंकि यह लक्ष्मी की पकड़ से बहुत दूर है।

न्योकुम पर्व पूरे समुदाय के कल्याण तथा उन्नत कृषि के लिए मनाया जाता है। ग्रामवासी सोत्साह रंग-बिरंगे परिधान, चावल, मांस तथा ओपांग की व्यवस्था करते हैं। ग्राम पुरोहित कुछ लोगों के साथ प्रत्येक परिवार की देहली पर जाते हैं। वहां उनका स्वागत ओपांग से तथा चावल से किया जाता है। गाँव की इस परिक्रमा के समाप्त हो जाने पर निश्चित समय पर ग्रामवासी पुरोहित के नेतृत्व में उस स्थान



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर एकत्र होते हैं जहाँ न्योकुम "बी" की पूजा-अर्चना होनी है। देवता को बांस के पतले छोटे फट्टे तथा केन से बनाया जाता है। मूर्ति को विभिन्न प्रकार की जंगली लकड़ियों तथा फूलों से सजाया जाता है। निशी महिलायें अपनी-अपनी "इंगिन अपो" और "अर्चा" लिए मूर्ति के पास खड़ी हो जाती हैं। ओपांग मूर्ति को अर्पित किया जाता है। आशीर्वाद स्वरूप ओपांग का शेष भाग वापस कर दिया जाता है। गांव की रात ओपांग के आनन्द से आनन्दमय रहती है। यहां के लोग इस पुण्य अवसर पर देवता से गाँव की सम्पन्नता की प्रार्थना करते हैं।...देश के मैदानी भागों में पहले इसी तरह शीतला तथा माँ काली की भी पूजा-अर्चना की जाती थी।

सोलुंग का त्यौहार कृषि कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व मार्च-अप्रैल में मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग रंग-बिरंगे परिधान पहनते हैं। विभिन्न तरह के रंग-बिरंगे पत्थरों से बने आभूषण उनकी नैसर्गिक सुन्दरता को चार चाँद लगाते हैं। दुलहन की तरह घर को सजाते हैं। ग्राम देवियां सुसज्जित होकर बांस से बने बरतन में चावल का आटा, गोलाकार सूखी लौकी में ओपांग लेकर गाँववासियों के जुलूस के साथ पूजास्थल तक आती हैं। पूजा स्थल पर पुरोहित बांस से देवता की मूर्ति बनाते हैं। ग्राम देवियां मूर्ति पर आटा छिड़कती हैं। देवता के आशीर्वाद स्वरूप चावल का आटा उपस्थित जन समुदाय को बांटती हैं तथा ओपांग के मधुर मधु का रसास्वादन कराती हैं। गांव के लोग एक दूसरे के घर जाते हैं। उनका स्वागत चावल तथा ओपांग से होता है। कितना मनोहारी दृश्य होता है। सामुदायिक भावना के अस्तित्व की प्रत्यक्ष अनुभूति।...काली कमली वाले की कृपा है कि इस पवित्र नगरी में मुद्राकृत मीना का प्रवेश नहीं हुआ। अन्यथा इनका सामुदायिक स्नेह, परस्पर सहायता और सहभागिता की पवित्र भावना मीना की घृणित ज्वाला में ख़ाक हो गयी होती।

बुरीबुत तीन दिन तक चलने वाला एक प्रमुख त्यौहार है। फरवरी के अन्तिम सप्ताह में मनाया जाता है। यहाँ के मूलवासियों के सम्पूर्ण कल्याण तथा कृषि उत्पाद की अधिकता के लिए इस पर्व का अत्याधिक महत्व है। पूजा स्थल पर बांस के खम्भे एक कतार में गाड़ दिये जाते हैं। बांस के टुकड़ों से देवता की मूर्ति बनायी जाती है। फूलों तथा केन के बने अलंकारों से इन्हें अलंकृत किया जाता है। सर्वप्रथम पुरोहित मंत्रोचारण करके समस्त देवताओं को पूजास्थल पर आने की प्रार्थना करते हैं। गाँव के युवक-युवतियाँ, पुरुष-महिलायें, वृद्ध तथा बच्चे



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने-अपने समूह के साथ खड़े रहते हैं। ग्राम बालायें अपने पारम्परिक परिधानों में सुसज्जित होकर थाली में चावल का आटा लेकर गीत गाती हुई पूजा-स्थल में प्रवेश करती हैं। बुरीबत देवता पर आटा छिड़कती हैं। मिथुन के सींग पर आटा लगाती हैं तथा ओपांग का छिड़काव करती हैं। उपस्थित युवक-युवतियाँ, पुरुष-महिलायें और बालक-बालिकायें हर्षोल्लास के मध्य एक दूसरे के गालों पर आटा पोतती हैं। इस दौरान भागने, गिरने, उठने का दौर चलता रहता है। जंगल में मंगल ही मंगल होता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति ने अपनी सम्पूर्ण प्रसन्नता यहाँ बिखेर दी है। रात्रि में सामूहिक भोज होता है। पुरोहित को चावल तथा ओपांग की दक्षिणा देकर बिदा किया जाता है।... असमियाँ अनुवादक ओपांग के अगले दौर के लिए रुक गये।... ओपांग ने मानसिक स्नायुओं की तार्किकता को लहर दिया।... दिल्ली में इसी तरह होली का त्यौहार मनाया जाता है।...मीना-मधु का शोरूम बंद रहता है।...चंचला मीना त्यौहार के दो दिन पूर्व ही अपने आशिकों के घर पहुँच जाती है।... मीना-मोह में फंसा प्राणी अपनी तार्किक शक्ति समाप्त कर बैठता है।... गाली गलौज, मार-पीट का वीभत्स दृश्य कहीं-न-कहीं दिखाई दे ही जाता है। फटे सर से बहते खून की धार तथा दुर्घटनाग्रस्त मृतक की पत्नी के आंसुओं को देखकर मीना का अट्टहास।... विद्रोहात्मक संदेश... मीना का शो रूम बंद करो... मानव को बचाओ !

मोपिन का पर्व सुख व समृद्धि का प्रतीक है। सामूहिक जीवन का सुखद संदेश। इस दिन मां मोपिन की आराधना की जाती है। उपासक मां को वसुन्धरा पर आने का आग्रह करते हैं। "हे देवी मां मोपिन ! आप अपने उपासकों की प्रसन्नता व समृद्धि को बढ़ायें । हे मां ! हम आपके शुभागमन से उत्पन्न प्रसन्नता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप यथाशीघ्र आयें तथा हमारे गांव को सुख, सम्पन्नता तथा समृद्धि प्रदान करें।" मां मोपिन। मां का प्रतीक है। जिसका कोई प्रतिस्थापन नहीं है। वह अपने उपासक बच्चों से कहती हैं "क्या तुम मेरे स्वागत के लिएओपांग लाये हो ? क्या मेरे लिए चावल की व्यवस्था किये हो ?"... आदि। इस दिन लोग सामूहिक रूप से चावल खाते हैं तथा ओपांग की आध्यात्मिक दुनिया में सैर करते हैं। आदी समुदाय के लोगों की मान्यता है कि ओपांग उन्हें तनाव रहित तन व मन देता है। उनकी कार्यकुशलता बढ़ाता है। सामूहिक हित की भावना बढ़ाता है।... सूर्य अस्त होने को चला।... वापसी की तैयारी। तन और मन के आनन्दमय समायोजन के



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ वापस कैम्प ।... नव जीवन में संघर्ष शक्ति के साथ सूर्योदय ।... मेघों के देश मेघालय की ओर प्रस्थान ।

अरुणाचल प्रदेश, जिसके प्राकृतिक सौन्दर्य, मूल वासियों की निश्चलता, सहिष्णुता, उदारता, निष्कपटता, शांतप्रियता, निःस्वार्थता तथा समानता की प्रगाढ़ भावना को देखकर वेरियर इलविन ने अपनी पुस्तक "आर्ट आफ द नार्थ ईस्ट फ्रंटियर" में कहा था, "दुनिया में अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है ! यहीं है ! यहीं है !" की मधुर स्मृति को संजोये बंजारा नयी मंजिल की ओर चल पड़ा । ऊँचे पर्वतों, घने जंगलों के बीच स्थित उपत्यकाओं की स्वर्गिक शक्ति का सम्बल लेता हुआ असम सीमा की पुलिस चेक पोस्ट पर सह यात्रियों के साथ रुका । इनर लाइन पास के सम्बन्ध में आवश्यक पूछताछ के बाद असम में प्रवेश ।... "आप लोग कुछ खा-पी लें ।... सफर लम्बा है", ड्राइवर का आदेशात्मक स्वर । एकाएक सामने खड़ी मीना ।... खून के धब्बे से चमकती हिलोरें लेती उसकी सफेद चुनरी ।...कुछ समझ में नहीं आ रहा... । असम मद्य निषेध एक्ट, 1952 में तो मीना के प्रवेश पर प्रतिबंध ।... राज्य की अर्थव्यवस्था में मुद्राकृत मीना के योगदान के लिए सीमित क्षेत्रों में प्रवेश की अनुमति । चित्रा सदृश्य मधुर मुस्कान के साथ मीना का मनोहारी निमंत्रण ।...लोग बाग दौड़ पड़े ।... मीना की दर कम ।...बंजारा तीराहे पर खड़ा ।...एक ओर भौतिकवादी मीना, दूसरी ओर अध्यात्मिकता की साक्षात प्रतिमूर्ति ओपांग और तीसरी ओर कामरूप कामाख्या का दिव्य आकर्षण ।...एकाएक आंखों में चमक, अधरों पर मुस्कान और मन में प्रसन्नता । कामरूप कामाख्या की ओर चल पड़ा ।... अध्यात्मिकता और भौतिकता का समिश्रण ।... आत्मा की आवाज । मीना की लालिमा से दूर ...मां की गोद में ।

आज की उपभोगवादी मौद्रिक अर्थव्यवस्था में वह मुद्रा का परिणय सूत्र पहनकर, सफेद मांग में शमशान की राख भरकर, सफेद भौहों पर काली पट्टी लगाकर, आंखों में कुटिलता लेकर, अधरों पर गर्वीली परिहास बिखेरती, स्वच्छ हिम श्वेत आंचल में स्नेह, प्रेम, उपासना की जली लाश के साथ मदमस्त होकर आगे बढ़ती जा रही है । वह भूल गयी है कि गर्व से तने वृक्ष तूफान के एक झटके से टूट कर ठूंठ बन जाते हैं । बाढ़ आते ही उजड़ कर खारे समुद्र में समा जाते हैं ।...गर्व से पतन का मार्ग प्रशस्त होता है । प्रकृति का चक्र उसे एक दिन अवश्य थका देगा ।...पापों के बोझ से बोझिल होकर अपने प्राचीन सांस्कृतिक-अध्यात्मिक



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल्यों को पुनः प्राप्त करना चाहेगी । अपने अध्यात्मिक उपासकों को हाथ में मशाल लेकर ढूंढेगी । परन्तु सब व्यर्थ ।...तब तक प्राचीन मूल्यों के उपासक उसकी उपभोगवादी संस्कृति के हाथों कालकवलित हो चुके होंगे ।...अब भी समय है कि वह मानव कल्यांण का व्रत लेकर सुधामय जीवन को स्वीकार कर ले ।... अपने सूर्यास्त की प्रतिक्षा न करे ।...

मेघालय की राजधानी शिलांग । रात्रि का अन्तिम प्रहर । बुखार से तपता शरीर । अंधेरे में रोशनी की तलाश में तड़पता मन । अशान्त चित्त । एक आवाज "बुद्धू कहीं के ! मुझे बुला लिया होता ।...हमारी वेदना को तुम पुरुष लोग क्या समझोगे !...अभी कितनी सीताओं की अग्नि परीक्षा शेष हैं ?...यह मत भूलो इस अग्नि परीक्षा की मनोवृत्ति के कारण कोई भी कन्या राम जैसे वर की कामना नहीं करती है ।...वह तो व्रत रखती हैं, 'एक निष्ठ प्रेमी शिव' सदृश्य जीवन साथी के लिए ।... तुम तो 'सोमपः अमृतपः सौम्यों महातेजा महाधुतिः । तेजोमयः अमृत-मयः अन्नमयश्च सुधापतिः' के उपासक हो ।"...ज्वाला से निकली चिंगारी...मीना और एक निष्ठ प्रेमी ! विरोधास... । अचानक सन्नाटा भंग हुआ । उपदेशात्मक दिव्य आवाज..."मीना के जीवन में काम और भोग का स्थान नहीं । मानव ने उसके सरस जीवन में मधु-विष घोल दिया है ।...विष कन्या के स्पर्श मात्र से काम, भोग और मरघट का मार्ग प्रशस्त हो जाता है ।"...बुद्धू बंजारा और दोष- निर्दोष का फैसला ! वह तो यही जानता है : "विष रहित जीवन ही सुधामय संसार का सार है । शेष मानव और प्रकृति के संघर्ष पर ।"



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# बंजारे की मीना—मद और मौत

शिलांग से पच्चास किलोमीटर दूर, चेरापूँजी की यात्रा। वक्राकार रास्ता। हजार फीट गहरे दर्रे। आनन्द व भय का मिश्रित अनुभव। एकाएक पर्वत श्रृंखला की मिट्टी ने ध्यान आकृष्ट किया। मिट्टी—, मन-मोहनी और लाल। लालिमा की नग्नता को ढ़के, हरितिमा की मनोहारी चादर। विशाल पाइन वृक्ष । इनकी छत्र-छाया में अठखेलियां करते, मुस्कराते केले, सेव, अनंन्नास के तरु। इन वृक्षों से लिपटी लतायें। इनके चरणों को धोता जलप्रपात का दुग्ध जल। ...यह क्या ? प्रकृति की इस सुन्दर, सुरम्य व नैसर्गिक लालिमा पर, कालिमा का धब्बा ? पेड़ काटे जा रहे हैं और हरितिमा की चादर फाड़ी जा रही है। पर्वत श्रृंखला की पवित्र कौमार्यता को भंग कर, उस पर कालिमा की चादर चढ़ाई जा रही है।

...विचित्र स्थिति है। मीना की मदिरा से मदस्त मानव का रुधिर, मांस और चमड़ा भी तो लाल है। फिर ऐसा क्यों ? ...याद आया। मद से विक्षिप्त मानव, अपनी लाली पर उगे काले बालों को देखता है, अपनी आंखों की काली पुतलियों को देखता है, परन्तु अपनी आत्मा की पवित्र, प्रकांशमान लालिमा को नहीं देख पाता। इसी लिए वह प्रकृति की लालिमा को कालिमा में बदलना चाहता है। इस प्रक्रिया के दौरान वह जीवन संगीत को भी भूल गया है। उसे लाल मिट्टी के गर्भ से निकले व पाताल से जीवन रस लेते, इन वृक्षों पर रंग-बिरंगे पक्षियों का मधुर संगीत नहीं सुनाई पड़ता। मद-मस्त मानव ने इस पर्वत श्रृंखला को संगीत विहीन कर डाला। संगीत दात्रियों को अपनी जठराग्नि के हवाले कर डाला। प्रकृति के साथ, लक्ष्मण रेखा पार करता, क्रूर मजाक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुराणों में कहा गया है:

"समुद्र मेखले देवि ! पर्वत स्तन-मण्डले ।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमस्व मे ॥"

'हे देवी माँ ! प्रातः उठते ही तुम्हारा स्पर्श पैर से कर रहा हूँ। इसके लिए क्षमा करना। इसके सिवा कोई विकल्प तो नहीं है। यह विशाल पर्वत श्रृंखला, तुम्हारा स्तन-मण्डल है। समस्त नदियां तुम्हारे स्तन की दुग्ध धारा हैं। इस दुग्ध से समस्त प्राणी जीवित हैं। तुम तो विष्णु पत्नी हो, माँ ! हमारा यह अपराध क्षमा करना। हम संतान भक्तिभाव से तुम्हे प्रणाम करते हैं।' आज, मद की मदिरा से मदस्त मानव इस दुग्ध स्रोत को ही काला करने में जुटा है। पर्वत श्रृंखला को बरबाद करके, मानव, अपने अस्तित्व को समाप्त करने की ओर अग्रसर है।

याद आयी, ब्रज भूमि की। आज भी इधर-उधर बिखरे कदम के वृक्ष, टहनियों पर फुदकते, चहचहाते पक्षियों का समूह, मयूर का संगीतोन्मुख नृत्य, ब्रजमणि स्वरूपणी माँ यमुना की धारा, राधा-कृष्ण के पवित्र प्यार व त्याग का संदेश दे रही है। यहां का सम्पूर्ण जीवन पवित्र प्रेम का तथा त्यागमय है। ब्रज की मणि, माँ यमुना, आज तक मानव द्वारा मर्दित कालीदह की कालिमा से मुक्त नहीं हो सकीं। कल्पना मात्र से ही हृदय कम्पित होने लगता है कि इस ब्रजमणि के अभाव में मानव जीवन, वज्र हो जायेगा, जो सूर्य-चाँद की आंख मिचौली के बीच पिस-पिस कर रेत का रूप धारण कर लेगा और प्रकृति की आंखों की किरकिरी बन कर उसे भी अंधा बना देगा।

सैकड़ों वर्ष पूर्व का इतिहास साक्षी है कि मीना, अपनी मदिरा से, मानव को बरबाद करती आ रही है। इसका ज्वलंत उदाहरण है, मेघालय राज्य के 'नोह कलिकाई' जल प्रपात से संबंधित एक जनश्रुति। बंगला देश सीमा के पास। 'खासी' समुदाय की एक विधवा। पिता विहीन पुत्री गोद में। सहारे की तलाश। दूसरे पति का आगमन। पति मीना का अनन्य भक्त। परिणाम सामने। दैनिक क्रिया की तरह पत्नी को मारना, पीटना। पत्नी की कमाई पर जीवन यापन। मदिरा प्रेमी का समस्त व्यावहारिक गुण। एक दिन पत्नी जंगल से लकड़ी, जड़ी-बूटी



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और फल इत्यादि एकत्र कर, सायंकाल घर वापस लौटी। पति देवता मीना-मय में धुत्त। परन्तु खुश। पहली बार पत्नी ने पति को प्रसन्न देखा। चौखट के अन्दर गयी। पति के साथ प्रसन्नता पूर्वक माँस खाया। पति के साथ निद्रा देवी को समर्पित हो गयी। सूर्योदय के साथ घर से बाहर निकली। चौंक उठी। बगल की दीवार से सटी बांस की टोकरी में अपनी बेटी के कटे हाथ-पैर देख कर। रात्रि का मांस भी उसी का था। आत्मग्लानि से चिल्ला उठी। दौड़ पड़ी, पर्वत की चोटी की ओर। कूद पड़ी दर्रे में। माँ वसुन्धरा का वक्षस्थल फट गया। दुग्धवारि तीव्र गति से प्रवाहित होने लगा। घने जंगल के बीच, गिरते इस जल प्रपात पर पड़ती सूर्य-रश्मियां इन्द्र धनुष-सा सप्त रंग बिखेरती, मानव को एक ही संदेश देती हैं: "मीना-मय से दूर रहो"। इस महिला के नाम पर इस जल प्रपात को 'नोह-कलिकाई' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसकी कर्णभेदी आवाज, "मीना-मय-मदिरा से दूर रहो" चारों ओर गूंज रही है। यह आज भी सार्थक है। मीना हिंसा की जननी है। इसकी कोख से हिंसा ही उत्पन्न होती है। इसकी एक ही सहेली है, "बरबादी"! फिर इसके हाथ मानव कल्याण कहाँ ?

इस जल प्रपात से कुछ दूरी पर स्थित "खासी" गाँव। यहां के लोग प्रकृति से संघर्ष करके जीवनयापन कर रहे हैं, परन्तु मीना-मय से दूर। चारों ओर सम्पन्न एवं प्रसन्नमय जीवन है। जिधर देखो लाली ही लाली है। इनकी लालिमा की नैसर्गिकता बरकरार। कालिमा का यहां से पलायन हो चुका है। मिट्टी लाल, इसकी गर्भ से निकले पुष्प लाल, उगे वृक्षों के फल लाल और ग्रामवासियों के चमकते चेहरे भी लाल। इनका आत्मबल सशक्त। इनमें शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता का अभाव। इन्होंने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से कमजोर बनाने वाली, मीना-मय को जहर की भाँति त्याग दिया है। शहद, दालचीनी और तेजपत्ता की लालिमा को साथ लेकर, बंजारा, कभी मुस्काराता, कभी पीड़ित होता, चल पड़ा। जीवन के विचित्र परन्तु सत्य, अनुभव के साथ।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंजारा, जहां भी धूनी रमाता, उसका एकतारा बार-बार पूछता, "यह मीना कौन है ?" बंजारे के गुरुदेव, जिनका वह एक निष्ठ भक्त है और जो द्रौपदी के चीर हरण के मूकदर्शक, भीष्म पितामह की तरह बंजारे की बरबादी का षड्यंत्र चुपचाप देखते रहे, ने भी 'अंजाम-ए-दारू' पुस्तिका के प्रथम संस्करण को स्वीकार करते हुए पूछा था, "यह मीना कौन है ?" सुधा भी प्राय: बंजारे की आत्मा को झकझोरती हुई, यही प्रश्न पूछती है, "मीना कौन है ?" खामोशी की भी सीमा होती है, अन्यथा यह भी संशय, अविश्वास, और अवांछित विचारधारा का मार्ग प्रशस्त करती है।

मीना ! माँ वसुन्धरा की वह पर्वत श्रृंखला है, जहां से आज तक दुग्धवारि की एक भी कल्याणकारी बूंद प्रवाहित नहीं हुई, जिससे वाणशैया पर पड़े भीष्म पितामह की प्यास बुझाई जा सके। इसकी कोख से एक भी देवदारु का वृक्ष पैदा नहीं हुआ, जिसकी छत्रछाया में शम्भू शंकर घोर तपस्या कर सकें। इसने एक भी संजीवनी बूटी पैदा नहीं की, जिससे घायल लक्ष्मण की जान बचाई जा सके। एक भी रसधर फल की जननी न बन सकी, जिससे मानव, पशु-पक्षी अपनी क्षुधा शांत कर सकें। इसकी मिट्टी से एक भी सुगंधित पुष्प नहीं उगा, जिसे स्वयं कृष्ण, मालिन बन कर, राधा को समर्पित कर पाते। यह 'मानवकृष्ण' की राधा, रुक्मिणी और मीरा बनकर, मानव जाति को प्रेम, त्याग और वैराग्य का संदेश नहीं दे पायी।...हाँ ! इसकी कोख से बबूल, भटकटैया और धतूरा ही मुश्किल से पैदा हुआ,...जिसका पुष्प और फल शिवरात्रि के दिन शिव लिंग को शोभा देता है। हाइड्रोजन, आक्सीजन तथा कार्बन के संयुक्त अणु से निर्मित अलकोहल का नाम है, मीना ! अर्थात् अहंकार, महत्वाकांक्षा, क्षणिक सुख—भावी विनाश का त्रिगुण मिश्रण। मानव संहार की जननी। यह मानव को उस समय बरबाद करती है, जब वह सहज प्रेम व कृत्रिम सुख की तलाश में भटकता है। जब उसका प्यार विहीन बचपन, जवानी की घृणा में बदल जाता है। जब वह अध्यात्म की दुनिया से विमुख होकर भौतिकता की ओर अग्रसर होता है। जब वह सांकेतिक तिरस्कार का सामना न कर पाने के कारण दर-दर भटकता है। जब वह समस्या से संघर्ष नहीं कर पाता।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब वह भूल जाता है कि वह मानव है, संघर्ष ही उसका कर्त्तव्य है और कर्म, फल भोग की इच्छा से नहीं किया जाता:

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोअस्त्वकर्मणि ।।"

मेघालय की जयंतिया हिल्स की एक जनश्रुति का उल्लेख समीचीन होगा। इस पर्वत श्रृंखला के राजा जयंतरे, निःसंतान, को माँ दुर्गा की कठोर आराधना के बाद एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। उसका नाम जयंतिया रखा गया। वह 'वह दिन दूनी रात चौगुनी' गति से बढ़ती रही। यौवनावस्था की देहलीज़ पर कदम रखते ही राजा को उसकी शादी की चिंता होने लगी। योग्य वर तलाशते रहे परन्तु नहीं मिला। उन्होंने राज्य पुरोहित के पुत्र लंदाबर से उसकी शादी कर दी। जयंती देवी को उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। राजा की मृत्यु के उपरान्त जयंती देवी रानी सिंह के नाम से सिंहासनारूढ़ हुईं । लंदाबर, माँ भद्रकाली का उपासक था। उपासना के दौरान, एक दिन उसमें अहंकार आ गया। माँ भद्रकाली ने उसे बुद्धि विहीन होने का श्राप दे दिया। बुद्धि विहीन, अहंकार से पीड़ित, लंदाबर ने ऋतुकाल में रानी सिंह से जबरदस्ती सम्भोग किया। रानी सिंह से प्रताड़ित होकर वह जंगल-जंगल भटकने लगा। मीना को मौका मिला। उसने बिना समय खोये लंदाबर को अपनी गोद में बैठाकर मदिरा और मांस का गुलाम बना दिया।

इधर रानी सिंह ने माँ भद्रकाली की कठोर अराधना की। उनका पति श्राप मुक्त हो गया। उसमें बुद्धि का संचार हुआ। आत्म शक्ति जागृत हुई। वह मीना - मय से निकल भागा। परन्तु रानी सिंह के पास जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसने एक विधवा के घर में शरण लिया। माँ दुर्गा की कृपा से रानी सिंह की छाया सदृश्य एक युवती से विवाह किया। उससे महाशक्तिशाली पुत्र बारगोहन पैदा हुआ। कालचक्र के घूमने के साथ-साथ, रानी सिंह ने बारगोहन की माँ को बुलाकर कहा कि वह उसकी ही छाया है। अतः वह बहन स्वरूप है। रानी सिंह ने बारगोहन को राजसिंहासन पर बैठाया। स्वयं, माँ वसुंधरा की गोद में प्रविष्ट हो गयीं। बारगोहन उस स्थान को खोदने लगा ताकि रानी सिंह को निकाला जा सके। उसे



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात्रि में स्वप्न आया कि रानी सिंह अब इस लोक में नहीं आयेंगी। अतः उस स्थान को खोदो। वहां ताम्बे का पात्र मिलेगा। उसकी पूजा करो। बारगोहन ने ऐसा ही किया। जयंती देवी का मंदिर बनवाया। आज भी इस पर्वत श्रृंखला में बहन का बेटा ही राजा होता है।

यह जनश्रुति संकेत करती है कि शारीरिक, मानसिक और आत्मश्रद्धा की दुर्बलता ही मीना का शिकार है। यह अपने शिकार को बुद्धिहीनता की जड़ तक पहुंचा देती है, जहाँ उसका स्वागत करने, यमराज स्वयं उपस्थित होते हैं। अतः आवश्यकता है, शारीरिक, मानसिक और आत्मश्रद्धा को सशक्त बनाने की। सशक्त व्यक्तित्व ही, मनसा, वाचा, कर्मणा से मानव जीवन में प्रेम, स्नेह, त्याग की अनुभूति करा सकता है। मीना-मय-मदिरा की ममता से दूर, बंजारा, माँ वसुन्धरा की गोद में विश्राम करने चला।...वह थक गया है...अकेला पड़ गया है...। उसकी अपनी धुन भी साथ देने से इंकार कर रही है।...परन्तु उसके जीवन में चिर निद्रा ही विश्राम- स्थली होगी।...अभी उसे चलना ही होगा।...'गाता जाये बंजारा', की कहावत को चरितार्थ करना ही होगा।...कोई विकल्प नहीं।

एक बार, शशि ने शशिधर से पूछा कि वह उसे ही अपने मस्तक पर हमेशा क्यों रखना चाहते हैं ? शशिधर का जवाब था : नीले-कंठ की ज्वाला को शांत करने के लिए। तभी से शशि और नीलकंठ की मित्रता सुप्रसिद्ध हो गयी। कुछ ऐसा ही प्रश्न, भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य, सिन्हा साहब ने 'अंजाम-ए-दारू' पुस्तिका का प्रथम संस्करण स्वीकार करते हुए किया था। सिन्हा साहब अपने भाव, राग, ताल के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्यों के बीच प्रशंसा के पात्र रहे हैं। इस सेवा की अपनी एक प्रशासनिक खुशबू रही है। सिन्हा साहब ने कहा, "पुस्तिका तो सुन्दर है परन्तु खुद पीने वाले को उपदेश का हक नहीं।" प्रश्न तो वाजिब था। परन्तु उत्तर देने का हक़ नहीं। इसे प्रशासनिक नियम कहा जाता है। सिन्हा साहब के भाव, राग, ताल के प्रतीक श्री हरिवंशराय "बच्चन", जो वास्तव में विशुद्ध रूप से भावना की अभिव्यक्ति तथा मनमोहक संगीत के प्रखर प्रेमी थे,



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने अपनी एक कविता के माध्यम से इस प्रश्न का आंशिक उत्तर देने का प्रयास किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य का पूर्ण संतोषजनक उत्तर देना कठिन होता है।

"प्याला है, पर पी पाएँगे, है ज्ञात नहीं इतना हमको,
इस पार नियति ने भेजा है असमर्थ बना कितना हमको;
कहने वाले, पर, कहते हैं, हम कर्मों में स्वाधीन सदा,
करने वालों की परवशता है ज्ञात किसे, जितनी हमको;
कह तो सकते हैं, कह कर ही कुछ दिल हलका कर लेते हैं,
इस पार अभागे मानव का अधिकार न जाने क्या होगा !"

गरल-पायी भगवान शंकर ही गरल के स्वाद व प्रभाव को भक्तों तक पहुंचा कर इस विष पान से उन्हें विमुक्त कर सकते हैं।—बंजारा ठहरा उनका एक अदना भक्त। वह भी 'मेघालय कारावास का जमादार'। 'सजायाफ्ता कैदी का जीवन शिरोधार्य कर शनैः -शनैः चिर निद्रा की ओर बढ़ाता कदम।' याद आ रही है, स्वर्गीय बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की हृदय वाणी, जिससे शायद सिन्हा साहब के प्रश्न का एक और उत्तर मिल सके-!

"मधु चक्खा, मधवा भी ढाला, अधरामृत का पान किया,
स्वाद-समस्या की उलझन का भेद-भरम कुछ जान लिया।
मान लिया, मधु-रस चखकर ही, अपने को पीने वाला,
शायद, भूल गये थे विष को देख सुधा-रस का प्याला !"

बंजारे ने, सिगरेट से जलाई गयी, चित्रा की गोरी शरीर की गोरी चमड़ी पर चमकते काले-काले धब्बों को देखा। पुरुष समाज के प्रति उसके अन्दर सुसुप्त ज्वालामुखी का अनुभव हुआ। चित्रा ! अप्सरा की साक्षात् प्रतिंमूर्ति। अनेकानेक स्वप्नों को संजोया था, विवाह के पूर्व। शादी वह भी कनिष्ठ अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग से। लक्ष्मी का खुलेआम आगमन। परन्तु मानसिक संघर्ष। "ब्राह्मणो जायमानो हि पृथिव्याम् अधिजायते, ईश्वरः सर्वभूतानां धर्म कोषस्य गुप्तये"। अर्थात धर्म रूपी खजाने की रक्षा के लिए ब्राह्मणों का जन्म होता है।



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह भी भारद्वाज वंशीय ब्राह्मण था। कर्तव्य विमुख, लक्ष्मी की चंचला से आकर्षित होकर धर्म को भूल गया। धर्म और कर्म के संघर्ष से उत्पन्न अशान्ति को शान्त करने के लिए मीना-मय को सौभाग्यवती बना लिया। पत्नी को मारना-पीटना, सिगरेट से जलाना, उसके लिए आसान बात हो गयी थी। उसकी लक्ष्मी की मलिका, उसकी माँ व बहन हो गयीं। चित्रा शांत। ब्राह्मण कन्या कर भी क्या सकती थी। उत्तराखण्ड, काली कमली वाले की छत्रछाया में ज़ीवन्त है। पाप-पुण्य का निर्णय होने में ज्यादा विलम्ब नहीं होता। पाप की कमाई से पोषित मीना ने एक सायं उसे चिता तक पहुंचा ही दिया। चित्रा का संसार काले बादलों से घिर गया। उसका 'प्रतीक सुहाग' मिट गया। वह विधवा हो गयी। उसके तीनों बच्चे अनाथ। परन्तु वह हिम्मत नहीं हारी। स्वयं नौकरी कर अपने बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने को प्रयत्नशील। उसने भी बंजारे से कहा था, "शराब व काली कमाई ने उसके संसार को तहस -नहस कर दिया। अब उसके बच्चे अपने पैरों पर खड़े होकर, ब्राह्मण धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करेंगे।" मीना-मय से संत्रस्त एक परिवार की यह है सत्य-कथा।

मीना ! अपनी मय से, अभी कितनें परिवारों को मरघट तक पहुंचायेगी ? चुप क्यों हो... तुम्हारी भी तो आत्मा है ! ...व्यापारियों के हाथ कब तक बिकोगी ?... कितनी बद्दुआयें लोगी ?... कब तक आत्म शक्ति को कुचलोगी ? बोलो मीना !!



RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"A Government servant shall –

(a) strictly abide by any law relating to intoxicating drinks or drugs in force in any area in which he may happen to be for the time being;

(b) not be under the influence of any intoxicating drink or drug during the course of his duty and shall also take due care that the performance of his duties at any time is not affected in any way by the influence of such drink or drug;

(bb) refrain from consuming any intoxicating drink or drug in a public place;

(c) not appear in a public place in a state of intoxication;

(d) not use any intoxicating drink or drug to excess."

**EXPLANATION** – For the purpose of this rule 'public place' means any place or premises (including a conveyance) to which the public have, are permitted to have, access, whether on payment or otherwise.

– Rule 22 of the CCS (conduct) Rules, 1964

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

**त्रिपुरारी राय**

**5 जनवरी 1947**

श्री त्रिपुरारी राय का जन्म ग्राम ढ़ढ़नी, जनपद आजमगढ़ (उ. प्र.) में हुआ था। आपके पिता श्री विश्वनाथ राय तथा माता श्रीमती श्यामदुलारी राय थीं। श्री राय की शिक्षा लालगंज, आज़मगढ़, लखनऊ तथा वाराणसी में सम्पन्न हुई। समाज सेवा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने उ. प्र. शासन में विभिन्न पदों पर कार्य किया। अवकाश के क्षणों में सामाजिक व्याधिकी के क्षेत्र में लेख तथा शोधपत्र लिखना श्री राय की विशिष्टता है। समाज सेवा की भावना से प्रेरित होकर श्री राय ने **स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज** की स्थापना नई दिल्ली में की। यह समाज एक पंजीकृत आदर्श गैर-राजनीतिक स्वयंसेवी संस्था के रूप में समाज के समग्र विकास हेतु प्रयत्नशील है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.